

राधा अष्टमी: प्रेम, भक्ति और शक्ति का दिव्य उत्सव

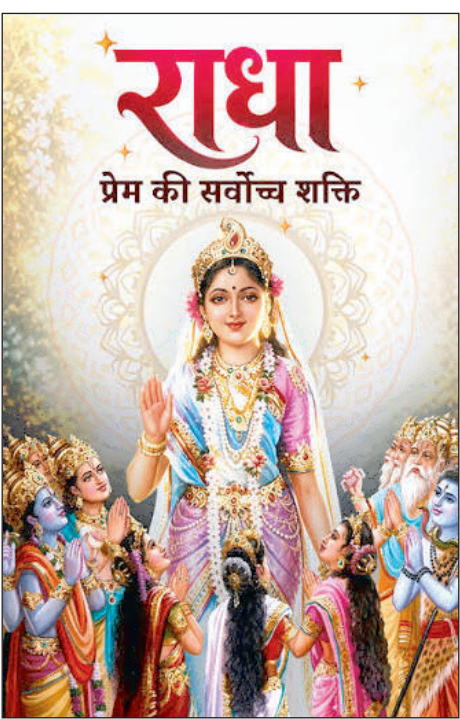


Ms. Aanchal Agarwal
Working as PRT in one of the renowned school of Delhi
Done PGDM in IT & HR, M.COM., B.Ed.

श्री राधा अष्टमी हर साल भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि को मनाई जाती है। यह दिन श्री कृष्ण जन्माष्टमी के ठीक 15 दिन बाद आता है। इस साल (2026) राधा अष्टमी 19 सितंबर 2026, शनिवार को मनाई जाएगी। राधा अष्टमी का त्योहार श्री राधा रानी के जन्मोत्सव के रूप में बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। राधा अष्टमी का धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व हिंदू धर्म में राधा अष्टमी का अत्यधिक पावन और विशेष महत्व है। सनातन परंपरा में राधा रानी को केवल श्री कृष्ण की प्रेयसी नहीं, बल्कि उनकी 'ह्लादिनी शक्ति' (आनंद प्रदान करने वाली शक्ति) और साक्षात महालक्ष्मी का स्वरूप माना गया है। मुख्य आध्यात्मिक महत्व कृष्ण भक्ति की पूर्णता: पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, राधा रानी के बिना भगवान श्री कृष्ण की पूजा और भक्ति अधूरी मानी जाती है।

जाती है। जो फल जन्माष्टमी का व्रत रखने से मिलता है, वह राधा अष्टमी का पूजन करने के बाद ही पूर्णता प्राप्त करता है। पापों का नाश और मोक्ष: ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार, राधा अष्टमी का व्रत रखने और राधा नाम का जाप करने से साधक के सभी कायिक, वाचिक और मानसिक पाप नष्ट हो जाते हैं तथा अंत समय में श्री चरणों में स्थान (मोक्ष) मिलता है। सुख, समृद्धि और अखंड सौभाग्य: जो महिलाएं इस दिन निर्जला या फलाहार व्रत रखकर राधा रानी का पूजन करती हैं, उन्हें अखंड सौभाग्य, संतान सुख और गृहस्थ जीवन में प्रेम व शांति की प्राप्ति होती है।

अष्ट सिद्धियों की प्राप्ति: राधा रानी की कृपा से व्यक्ति को जीवन में सभी भी धन-धान्य और वैभव की कमी नहीं होती, क्योंकि वे स्वयं श्री कृष्ण की सर्वोपरी शक्ति हैं। राधा रानी का प्राकट्य: पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, इस पावन तिथि को माता राधा का जन्म उत्तर प्रदेश के बरसाना (या रावल) गाँव में वृषभानुजी और माता कीर्ति के घर हुआ था। व्रत एवं पूजा की मुख्य विधि प्रातःकाल स्नान और संकल्प: सुबह सूर्योदय से पूर्व स्नान कर स्वच्छ वस्त्र (विशेषकर पीले या लाल) धारण करें और राधा अष्टमी व्रत का संकल्प लें। पूजा स्थल की सजावट: मंदिर की सफाई करके एक चौकी पर



लाल या पीला कपड़ा बिछाएं। उस पर राधा-कृष्ण की मूर्ति या चित्र स्थापित करें। पंचामृत स्नान और श्रृंगार: राधा रानी और श्री कृष्ण के विग्रहों को पंचामृत (दूध, दही, घी, शहद, गंगाजल) और फिर शुद्ध जल से स्नान कराएं। तत्पश्चात उन्हें नए सुंदर वस्त्र, आभूषण और ताजे फूल (विशेषकर कमल और गेंदा) अर्पित करें। अक्षत और कुमकुम तिलक: राधा रानी को रोली, कुमकुम और चंदन का तिलक लगाएं। भोग और मुख्य व्यंजन विशेष भोग: राधा अष्टमी पर अरबी (घुड़्यां) की सब्जी और पूरी का भोग लगाना बेहद शुभ और अनिवार्य माना जाता है।

मिठाई और पंचामृत: मालपुआ, खीर, माखन-मिश्री और पंचामृत का भोग लगाएं। तुलसी दल: भगवान कृष्ण के भोग में तुलसी पत्र अवश्य रखें, लेकिन ध्यान रखें कि राधा रानी को तुलसी सीधे नहीं चढ़ाई जाती (उसे कृष्ण जी के चरणों में या उनके भोग में रखा जाता है)। शुभ मुहूर्त और आरती मध्याह्न पूजा: राधा रानी का प्राकट्य दोपहर के समय माना जाता है, इसलिए मुख्य पूजा और आरती दोपहर (11:00 AM से 1:30 PM के बीच) की जाती है। कथा व आरती: राधा अष्टमी की व्रत कथा सुनें, राधा चालीसा या

राधा सहस्रनाम का पाठ करें और अंत में राधा-कृष्ण की आरती उतारें। मथुरा-बरसाना के विशेष आयोजन महाभिषेक: बरसाना (श्रीजी मंदिर) और वृंदावन के प्रमुख मंदिरों में तड़के 4 बजे दूध, दही और जड़ी-बूटियों से राधा रानी का दिव्य महाभिषेक होता है। संकीर्तन और बधाई गायन: पूरे दिन 'राधे-राधे' के नाम संकीर्तन, पद गायन और बधाई गीत गाए जाते हैं। चरण दर्शन: केवल इसी पावन दिन बरसाना के श्रीजी मंदिर में श्रद्धालुओं को राधा रानी के श्री चरणों के प्रत्यक्ष दर्शन का सौभाग्य मिलता है।

"सम्मानित विसर्जन सुनिश्चित नहीं, तो स्थापना का शुभलाभ नहीं" - राज गुरुजी महाराज का क्रांतिकारी आह्वान, दूषित नदी में विसर्जन को बताया आस्था का अपमान

गोरख पार्क के राज माता झंडे वाला मंदिर में दिया मार्गदर्शन, कहा- घर में ही कुंड बनाकर दूध, शहद, इत्र से करें विसर्जन, मिट्टी से लगाएं पौधा तो गणेश जी हरियाली बनकर लौटेंगे रिपोर्ट हंसराज परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

बिंदु 2: पर्वारण-अनुकूल और दिव्य विकल्प - 4 सूत्र इस धार्मिक और सामाजिक विसंगति से बचने के लिए स्वामी जी ने सुंदर, पवित्र और वैज्ञानिक मार्ग सुझाया: 1. पारिवारिक कुंड में विसर्जन: घर के आँगन, गली-मोहल्ले, पार्क या खुले मैदान में बड़ा पात्र (टब) बनाकर स्वच्छ जल भरें। 2. पवित्र द्रव्यों का उपयोग: उस कुंड में दूध, शहद, इत्र, गुलाल और प्राकृतिक फूलों के साथ सम्मानित विसर्जन करें। 3. प्रकृति को सम्पन्न करें: विसर्जन के पश्चात प्राप्त पवित्र जल को घर, पार्कों और खेतों के पौधों में सींचें। 4. पौधारोपण का संदेश: विसर्जन में प्रयुक्त मिट्टी से घर पर ही एक पौधा लगाएं - "गणेश जी आँखों के सामने पौधे के रूप में पल्लवित होकर हरियाली, खुशहाली और ऑक्सीजन प्रदान करेंगे।" बिंदु 3: इस नई पद्धति के 4 बड़े लाभ - सुरक्षित एवं सुगमता: नदी या बड़े जलाशयों पर होने वाली दुर्घटनाओं, भगदड़ और जान-माल की हानि से बचाव। - समय और टैफिक की बचत: शहर के बड़े टैफिक जाम और प्रशासनिक परेशानियों से राहत। - धन का सदुपयोग: विसर्जन और आयोजनों में व्यर्थ होने वाले धन को बचाकर जरूरतमंदों की सहायता और परोपकारी कार्यों में लगाया जा सकेगा। - धार्मिक गरिमा की रक्षा: सनातन परंपरा की पवित्रता अक्षुण्ण रहेगी और आस्था का अनादर रुकेगा। संपादकीय टिप्पणी: राज गुरुजी महाराज का यह विचार केवल धार्मिक नहीं, बल्कि पर्यावरणीय और मानवीय भी है। जब यमुना जैसी नदियाँ खुद ही प्रदूषण से जूझ रही हैं, तो उनमें POP की मूर्तियों का विसर्जन आस्था नहीं, अनदेखी है। घर में कुंड, फिर पौधा - यह



1

2

3

4



परंपरा को तोड़ना नहीं, बल्कि उसे वापस उसके मूल अर्थ - मिट्टी से जन्म, मिट्टी में विलय और जीवन को आगे बढ़ाना - से जोड़ना है। यह सच्चे अर्थों में विसर्जन नहीं, पुनर्सृजन है।

श्री गणेश पूजन एवं भजन संध्या में झूमे श्रद्धालु, भक्तिमय हुआ वातावरण

बिरसा वाहिनी फाउंडेशन के तत्वावधान में हुआ भव्य आयोजन, मुरहू में तीसरे दिन हुई संध्या आरती में उमड़ी भीड़

रिपोर्ट दीपक कुमार घोष परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक खूंदी/मुरहू

खूंदी में श्री गणेश पूजन के पावन अवसर पर बिरसा वाहिनी फाउंडेशन के तत्वावधान में विधिविधान से पूजा-अर्चना एवं भव्य भजन संध्या का आयोजन किया गया। भजनों की मधुर धुन पर श्रद्धालु देर शाम तक झूमते रहे और पूरा परिसर गणपति की भक्ति में लीन हो गया। वहीं मुरहू प्रखंड में चल रहे दस दिवसीय गणेश महोत्सव के तीसरे दिन की संध्या आरती में भी भारी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए। गुरुवार को आयोजित कार्यक्रम में श्रद्धालुओं ने भगवान श्री गणेश की पूजा कर सुख, शांति और समृद्धि की कामना की। पूजन के उपरांत आयोजित भजन संध्या में स्थानीय कलाकारों ने गणेश वंदना और भक्ति से ओत-प्रोत भजनों की



मनमोहक प्रस्तुति दी। भक्तिमय भजनों पर श्रद्धालु अपने-अपने अंदाज में झूमते नजर आए। कार्यक्रम के अंत में प्रसाद वितरण किया गया। बिरसा वाहिनी फाउंडेशन की संस्थापक सह राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती प्रिया मुंडा ने कहा कि ऐसे धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजनों का उद्देश्य समाज में भक्ति, एकता और आपसी सद्भाव को बढ़ावा देना है। कार्यक्रम में श्रद्धालु विजय मुंडा, समाजसेवी डॉ. डी.एन. तिवारी, डॉ. सेवंती, नाथूलाल कश्यप, महेश चौधरी, समाजसेवी सुबोध कुमार, विष्णु देव सहित बड़ी संख्या में स्थानीय लोगों ने भाग लिया। सभी ने आयोजन को भक्तिमय एवं आनंदमय बनाने के लिए आयोजकों की सराहना की। उधर, मुरहू प्रखंड में चल रहे दस दिवसीय गणेश महोत्सव के तीसरे दिन संध्या आरती में महिला-पुरुष श्रद्धालुओं की भारी उपस्थिति रही। भक्ति भाव से पूजा-अर्चना और आरती के पश्चात सभी के बीच प्रसाद का वितरण किया गया। मुख्य बिंदु एक नजर में: - आयोजन: बिरसा वाहिनी फाउंडेशन द्वारा श्री गणेश पूजन एवं भजन संध्या - स्थान: खूंदी मुख्य कार्यक्रम, मुरहू प्रखंड में दस दिवसीय महोत्सव - विशेष: भजन संध्या में देर शाम तक झूमे श्रद्धालु, भक्तिमय रहा माहौल - उद्देश्य: समाज में भक्ति, एकता और सद्भाव को बढ़ावा देना

गणेश जी की कृपा पाने का महापर्व है दूर्वा अष्टमी, सुख-सौभाग्य के लिए इस विधि से करें पूजा

भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की अष्टमी को मनाए जाने वाले दुराष्टमी व्रत की सही पूजा विधि, सिंदूरी वस्त्र, 11 दूर्वा का महत्व, धन प्राप्ति के उपाय और ग्रह-दोष निवारण के उपाय जानें दूर्वा अष्टमी का पवित्र पर्व पंचांग के अनुसार भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि को मनाया जाता है। सामान्यतः धर्म-कर्म के कार्यों में दूर्वा (दूब घास) का व्यापक उपयोग किया जाता है, लेकिन भगवान श्री गणेश की पूजा-अर्चना इसके बिना अधूरी मानी जाती है। पूरे तन और मन से यह व्रत रखने पर साधक को सुख और सौभाग्य की प्राप्ति होती है। इस दिन श्री गणेश के साथ-साथ भगवान शिव और माता पार्वती का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। भारत के पूर्वी भागों तथा त्योहार बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है, जहां इसे 'दुराष्टमी व्रत' के नाम से जाना जाता है। दूर्वा अष्टमी पूजा विधि सबसे पहले अपने घर के मंदिर में दही, फूल, अगरबत्ती और पूजा सामग्री को इकट्ठा करें। अब इस सारी सामग्री को दूर्वा यानी पवित्र घास अर्पित करें। फिर इसी दूर्वा को श्री गणेश, भगवान शिव और मां पार्वती को चढ़ाएं। दूर्वा अष्टमी के दिन श्री गणेश को तिल और मीठे आटे से बनी रोटी का भोग लगाना शुभ होता है। इसके अलावा ब्राह्मणों को दान-पुण्य करने से भाग्य भी उदय होता है। दूर्वा अष्टमी के दिन हो सके तो

सिंदूरी रंग के वस्त्र पहनें और श्री गणेश को 11 दूर्वा अर्पित करें। दौपत्य जीवन में सुख और समृद्धि को बरकरार रखने के लिए शिव मंदिर में तिल और गेहूं का दान करें। दूर्वा अष्टमी के दिन करें ये उपाय ब्राह्मण को भोजन की थाली में 7 दूर्वा के कुछ कण दान स्वरूप अर्पण करने से भगवान विष्णु व गणेश जी की कृपा प्राप्त होगी। दूर्वा मलकर नहाने से ग्रहों का अशुभ प्रभाव शुभता में परिवर्तित हो जाता है। दूर्वा की मुद्रिका बनाकर उत्तर दिशा में चन्द्रोदय के बाद अर्घ्य दें और महालक्ष्मी का ध्यान करते हुए धन प्राप्ति की कामना करें।

आशीर्वाद के दीयों से रोशान हुआ झज्जर जिला

सेवा संकल्प अभियान का हुआ भव्य शुभारंभ

परिवहन विशेष न्यूज

लाभार्थियों ने घरों के बाहर जलाया ‘आशीर्वाद का दीया’, अमृत सरोवरों, धार्मिक स्थलों व विकास योजनाओं पर भी हुआ दीप प्रज्ज्वलन दीपों की रोशनी ने दिया सेवा, सहभागिता और जनकल्याण का संदेश

बाढ़सा(झज्जर), 17 सितंबर सेवा, सहयोग और जनभागीदारी की भावना को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से झज्जर जिला में आज ‘सेवा संकल्प अभियान’ का भव्य शुभारंभ हुआ। अभियान के शुभारंभ अवसर पर जिलेभर में ‘आशीर्वाद का दीया’ प्रज्ज्वलित किया गया। दीपों की रोशनी से जिले में सेवा, विकास और जनकल्याण के संकल्प का संदेश गुंजा।

‘आशीर्वाद का दीया’ कार्यक्रम के तहत जिले के लाभार्थियों ने अपने-अपने घरों के बाहर दीप प्रज्ज्वलित किए। वहीं जिले के 51 अमृत सरोवरों, धार्मिक स्थलों तथा केंद्र एवं प्रदेश सरकार द्वारा किए गए

उद्घाटन वाले भवनों एवं विकास परियोजनाओं पर भी दीप जलाए गए। इस दौरान बड़ी संख्या में नागरिकों ने उत्साहपूर्वक भागीदारी करते हुए सेवा संकल्प अभियान के संदेश को जन-जन तक पहुंचाया।

एनआईसी बाढ़सा में पूर्वमंत्री ओमप्रकाश धनखड़ ने किया दीप प्रज्ज्वलित

झज्जर जिला में स्वास्थ्य सेवाओं के केंद्र बिंदू एम्स राष्ट्रीय कैंसर संस्थान बाढ़सा परिसर में गुरुवार की शाम आशीर्वाद का दीया प्रज्ज्वलित करने के लिए भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय सचिव एवं पूर्व मंत्री हरियाणा ओमप्रकाश धनखड़ व डीसी वर्षा खंगवाल पहुंचे। उन्होंने उत्साहपूर्वक परिसर में सेवा संकल्प अभियान की श्रृंखला में आशीर्वाद के दीये प्रज्ज्वलित किए।

सकारात्मक बदलाव के प्रति आभार का प्रतीक है आशीर्वाद का दीया : धनखड़

पूर्व मंत्री श्री धनखड़ ने कहा कि ‘आशीर्वाद का दीया’ सेवा संकल्प

अभियान की उस भावना का प्रतीक है, जिसमें जनकल्याणकारी योजनाओं से लाभान्वित परिवार अपने जीवन में आए सकारात्मक बदलाव के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। उन्होंने कहा कि एक दीप केवल प्रकाश नहीं देता, बल्कि आशा, विश्वास, सेवा और सहभागिता का संदेश भी देता है।

उन्होंने कहा कि केंद्र व प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का उद्देश्य समाज के अंतिम पायदान पर खड़े पात्र व्यक्ति तक लाभ पहुंचाना है। ‘सेवा संकल्प अभियान’ के माध्यम से सरकार की योजनाओं के लाभार्थियों के साथ-साथ आमजन को भी सेवा और जनभागीदारी से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने जिलावासियों से आह्वान किया कि वे अभियान से जुड़कर सेवा, सहयोग और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना को और मजबूत करें।

अमृत सरोवर व धार्मिक स्थलों पर प्रज्ज्वलित हुए दीए

डीसी वर्षा खंगवाल ने कहा कि जिले के 51 अमृत सरोवरों, धार्मिक स्थलों और विभिन्न विकास परियोजनाओं पर किया



गया दीप प्रज्ज्वलन झज्जर के विकास और जनकल्याण की यात्रा में सामूहिक भागीदारी का प्रतीक है। उन्होंने बताया कि 17 सितंबर से 17 अक्टूबर तक सेवा संकल्प अभियान के तहत विभिन्न जनकल्याणकारी, जागरूकता एवं



पर विशेष जोर रहेगा। आज जलाए गए ‘आशीर्वाद के दीयों’ ने झज्जर जिले में एकजुट होकर सेवा और जनकल्याण के संकल्प को नई रोशनी दी। इस अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष विकास वाल्मीकी, विनोद बाढ़सा, धर्मवीर

सरपंच सहित एडीसी जगनवास, सीईओ जिला परिषद मनीष कुमार फौगाट, एसडीएम बादली विशाल कुमार व अन्य क्षेत्र के गणमान्य लोगों ने सेवा संकल्प अभियान के तहत आशीर्वाद का दीया प्रज्ज्वलित किया।

आशीर्वाद के दीयों से जगमगाया झज्जर, जिलाभर में सेवा संकल्प अभियान का भव्य शुभारंभ

*अमृत सरोवरों, जनकल्याणकारी योजनाओं के लाभार्थियों और महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट्स पर प्रज्ज्वलित हुए आशीर्वाद के दीये

आगामी 17 अक्टूबर तक चलेगा सेवा संकल्प अभियान, सेवा और जनभागीदारी से जुड़ी गतिविधियों का होगा आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 17 सितंबर। जिलाभर में डीसी वर्षा खंगवाल के मार्गदर्शन में समाज के प्रत्येक वर्ग को सेवा का्यों से जोड़ने, जनकल्याण की भावना को व्यापक स्तर पर बढ़ावा देने और सामाजिक सहभागिता को मजबूत करने के उद्देश्य से सेवा संकल्प अभियान का गुरुवार को भव्य शुभारंभ हुआ। अभियान के तहत जिलाभर में विभिन्न स्थानों पर आशीर्वाद का दीया प्रज्ज्वलित कर सेवा, सहयोग और जनभागीदारी का संकल्प लिया गया। अमृत सरोवरों, केंद्र व प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं के पात्र लाभार्थियों तथा महत्वपूर्ण विकास परियोजनाओं से जुड़े स्थलों और संस्थानों पर आयोजित कार्यक्रमों में नागरिकों, लाभार्थियों और संबंधित विभागों ने सक्रिय सहभागिता की। वहीं झज्जर नगर बस स्टैंड परिसर में एसडीएम रवि मीणा ने आशीर्वाद का दीया प्रज्ज्वलित किया।

डीसी वर्षा खंगवाल ने बताया कि सेवा

संकल्प अभियान के माध्यम से समाज के प्रत्येक वर्ग को जनकल्याणकारी गतिविधियों से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। केंद्र व प्रदेश सरकार की योजनाओं के लाभार्थियों के साथ मिलकर चलाए जा रहे इस अभियान का उद्देश्य सेवा भावना, सामाजिक जिम्मेदारी और राष्ट्रनिर्माण के संकल्प को मजबूत करना है।

12 माँड्यूल के तहत आयोजित होंगी विभिन्न सेवा गतिविधियां

डीसी वर्षा खंगवाल ने बताया कि सेवा संकल्प अभियान के तहत 12 माँड्यूल के माध्यम से विभिन्न सेवा एवं जन कल्याणकारी गतिविधियां आयोजित की जाएंगी। इनमें आशीर्वाद का दीया एवं रक्तदान, मेरे सपनों का भारत-चित्र सेवा, नमो सेवा-अनकही कहानियां, आंगन मिलन सेवा, सेवा की कहानी, सेवा ज्योति कलश यात्रा-विकसित भारत का संकल्प, वडनगर वाराणसी सेवा यात्रा, सेवा मेरा योगदान, सेवा सेतु अभियान, सेवा के रंग, राष्ट्र के संग, सेवा फस्ट इनोवेशन चैलेंज तथा सुशासन सेवा संवाद प्रमुख हैं।

उन्होंने कहा कि इन गतिविधियों का उद्देश्य सेवा भावना को सामाजिक जिम्मेदारी और राष्ट्रनिर्माण से जोड़ना है। डीसी ने कहा कि सेवा फस्ट इनोवेशन चैलेंज के जरिए सेवा का्यों में नए विचारों एवं नवाचार को प्रोत्साहित किया जाएगा।

51 अमृत सरोवरों और महत्वपूर्ण विकास परियोजनाओं पर प्रज्ज्वलित हुआ



आशीर्वाद का दीया जिला परिषद के सीईओ मनीष कुमार फौगाट ने बताया कि सेवा संकल्प अभियान के शुभारंभ अवसर पर जिला के 51 अमृत सरोवरों, महत्वपूर्ण विकास परियोजनाओं तथा जनकल्याणकारी योजनाओं के पात्र लाभार्थियों से जुड़े स्थलों पर आशीर्वाद का



दीया प्रज्ज्वलित किया गया। इन कार्यक्रमों के माध्यम से नागरिकों को सेवा, सहयोग और सामाजिक जिम्मेदारी के साथ जोड़ने का संदेश दिया गया। आशीर्वाद का दीया प्रज्ज्वलन कार्यक्रमों में नागरिकों ने जनकल्याण, सहयोग और सकारात्मक सहभागिता का



जिलाभर में गौशाला, धार्मिक स्थलों और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर हवन यज्ञ के साथ हुआ दीपोत्सव सेवा संकल्प अभियान के चलते गुरुवार जहां गौशालाओं और अन्य जगहों पर हवन यज्ञ हुए वहीं पशुपालन विभाग की ओर से गौ माता के स्वास्थ्य सुरक्षा के दृष्टिगत

गौशालाओं में पशु जांच की गई। वहीं सायं के समय सरकार के मुख्य प्रोजेक्ट को आकर्षक लाइटों से सजाया गया और आशीर्वाद का दीया प्रज्ज्वलित किया गया, जिसमें आमजन के अलावा विभिन्न योजनाओं के पात्र लाभार्थियों ने भी दीया प्रज्ज्वलित कर सेवा भाव का संकल्प लिया।

छुड़ानी में भी हुआ आशीर्वाद का दीया प्रज्वलित

झज्जर, 17 सितंबर। सेवा संकल्प अभियान के तहत गरीबदासीय प्रमुख पीठ श्री छतरी साहिब, छुड़ानी धाम को 1008 दीपों से जगमग किया गया। पीठ पीठाधीश्वर श्रीमहंत दया सागर जी ने आशीर्वाद का दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर संत गरीबदास फाउंडेशन के अध्यक्ष एवं कार्यक्रम संयोजक आनंद सागर ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री श्री नाथब सिंह सैनी के नेतृत्व में सेवा एवं जनभागीदारी की भावना को आगे बढ़ाया जा रहा है। फाउंडेशन के 108 कार्यकर्ताओं ने दीप प्रज्वलित कर अभियान में सहभागिता की। उन्होंने बताया कि धाम तक बेहतर राजमार्ग सुविधा होने से अब विभिन्न राज्यों से आने वाले श्रद्धालु कम समय में दर्शन कर अपने घर लौट सकते हैं।

मतदाता सूची में नाम दर्ज कराने और सुधार का अंतिम अवसर, अब केवल 13 दिन शेष : डीसी

एसआईआर-2026 अभियान के तहत 30 सितंबर तक दर्ज कराए दावे- आपत्तियां, पात्र युवा तुरंत भरे फॉर्म-6

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 17 सितंबर। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार जिला झज्जर के चारों विधानसभा क्षेत्रों में विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर)- 2026 अभियान के तहत मतदाता सूची को शुद्ध एवं अद्यतन बनाने का कार्य जारी है। डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी वर्षा खंगवाल ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि अभियान के दौरान प्रत्येक पात्र नागरिक का नाम मतदाता सूची में दर्ज हो तथा अपात्र नामों को हटाने और आवश्यक संशोधनों की प्रक्रिया निर्धारित समय सीमा में पूरी की जाए।

डीसी ने पात्र नागरिकों से अपील की कि वे अपना तथा परिवार के सभी पात्र सदस्यों का नाम और विवरण प्रारंभिक मतदाता सूची में समय रहते जांच लें। उन्होंने कहा कि जिन पात्र नागरिकों का नाम प्रारंभिक मतदाता सूची में दर्ज नहीं है, वे निर्धारित दस्तावेजों एवं घोषणा-पत्र के साथ फॉर्म-6 के माध्यम से नाम शामिल करवाने के लिए दावा प्रस्तुत कर सकते हैं। पात्र युवाओं से विशेष आग्रह किया गया कि वे मतदाता बनने के लिए फॉर्म-6 भरकर आवेदन करें और 30 सितंबर की अंतिम तिथि का इंतजार न करें।

उन्होंने अधिकारियों से कहा



कि अभियान के दौरान नागरिकों को आवेदन प्रक्रिया की जानकारी उपलब्ध करवाने के साथ-साथ दावे-आपत्तियों के समयबद्ध निपटारा पर विशेष ध्यान दिया जाए।

वोटर हर हाल में 30 सितंबर तक दर्ज कराए दावे-आपत्तियां डीसी ने बताया कि एसआईआर-2026 के संशोधित कार्यक्रम के अनुसार मतदाता सूची से संबंधित दावे एवं आपत्तियां 30 सितंबर तक दर्ज कराई जा सकती हैं। प्राप्त दावे-आपत्तियों का निपटारा 28 अक्टूबर तक किया जाएगा, जबकि अंतिम मतदाता सूची का प्रकाशन 6 नवंबर को होगा।

उन्होंने नागरिकों से अपील की कि वे निर्धारित समय सीमा के भीतर अपने दावे एवं आपत्तियां दर्ज कराएं। मतदाता सूची में नाम, पता, आयु, फोटो अथवा अन्य विवरण की जांच कर लें और किसी भी प्रकार की त्रुटि पाए जाने पर समय रहते आवश्यक

संशोधन के लिए आवेदन करें। मतदाता फॉर्म-7 और फॉर्म-8 से कराए आवश्यक सुधार डीसी ने बताया कि मतदाता सूची में नाम, पता, आयु, फोटो अथवा अन्य विवरण में त्रुटि होने पर फॉर्म-8 के माध्यम से संशोधन के लिए आवेदन किया जा सकता है। वहीं, मृत, अपात्र, स्थायी रूप से स्थानांतरित अथवा अन्य स्थान पर पहले से पंजीकृत मतदाता के नाम के संबंध में फॉर्म-7 के माध्यम से आपत्ति दर्ज कराई जा सकती है।

उन्होंने नागरिकों को अपने आवेदन के साथ आवश्यक दस्तावेज निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार प्रस्तुत करने चाहिए, ताकि दावे-आपत्तियों का निपटारा नियमानुसार किया जा सके।

बीएलओ, ईआरओ और ईईआरओ से प्राप्त करें सहायता जिला निर्वाचन अधिकारी वर्षा खंगवाल ने कहा कि नागरिक दावे एवं आपत्तियां दर्ज

सेवा के माध्यम से युवा वर्ग समाज और राष्ट्र निर्माण में दें योगदान : धनखड़

नागरिक अस्पताल परिसर में सेवा संकल्प अभियान के तहत रक्तदान शिविर आयोजित

पूर्व मंत्री ओमप्रकाश धनखड़ ने किया रक्तदान शिविर का उद्घाटन

झज्जर, 17 सितंबर देशभर में सेवा संकल्प अभियान के तहत विभिन्न सेवा कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इसी कड़ी में गुरुवार को जिला नागरिक अस्पताल में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। हरियाणा के पूर्व मंत्री ओमप्रकाश धनखड़ ने शिविर का रिबन काटकर शुभारंभ किया और रक्तदाताओं का बैज लगाकर उत्साहवर्धन किया।

पूर्व मंत्री ओमप्रकाश धनखड़ ने कहा कि आज से सेवा संकल्प अभियान के तहत देशभर में कहीं रक्तदान शिविर, कहीं स्वास्थ्य जांच शिविर तथा विभिन्न सामाजिक सेवाओं के कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि सेवा के माध्यम से समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने और राष्ट्र निर्माण में योगदान देने का संकल्प लिया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी भारत को विकसित और

आत्मनिर्भर राष्ट्र के रूप में आगे बढ़ते हुए देखना चाहते हैं। विकसित भारत के विजन और राष्ट्रसेवा के संकल्प के साथ देशभर में विभिन्न सेवा एवं संकल्प कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि जनभागीदारी के माध्यम से विकसित भारत के निर्माण के संकल्प को मजबूत किया जा सकता है।

पूर्व मंत्री ने झज्जर जिला सहित प्रदेशवासियों से आह्वान किया कि इस अभियान के तहत प्रत्येक व्यक्ति कोई न कोई सेवा भाव का संकल्प ले और समाजहित में अपना योगदान दे। उन्होंने कहा कि सेवा का्यों के माध्यम समाज में सहयोग और जनभागीदारी की भावना को बढ़ावा देने का अवसर मिलता है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने देशवासियों से 2047 तक विकसित भारत के निर्माण के संकल्प के साथ ‘आशीर्वाद का दीया’ जलाने का भी आग्रह किया है। उन्होंने कहा कि जहां कृतज्ञता, बदलाव और विकसित भारत को विजन हो, वहां पूरा देश एक साथ खड़ा रहता है। उन्होंने रक्तदान शिविर के माध्यम से नागरिकों को रक्तदान के महत्व के प्रति जागरूक



किया गया तथा सेवा और मानवता की भावना को मजबूत करने का संदेश दिया गया। इस अवसर पर नशा मुक्त हरियाणा की शपथ भी दिलाई गई। इस अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष विकास वाल्मिकी, जिला परिषद के चेयरमैन कप्तान सिंह बिरथाना, भाजपा

नेता संजय कबलाना, पूर्व चेयरपर्सन सुनीता चौहान, प्रवीण गर्ग, कमल गिरोड़ा बिट्टू, सिविल सर्जन डॉ मंजू कालिया, उपसिविल सर्जन डॉ कुलदीप, तहसीलदार शेखर परवाल सहित सम्बंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

सेवा संकल्प अभियान : गौशालाओं में यज्ञ व पशु स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित

गौशालाओं में हवन के साथ गौ वंश के स्वास्थ्य की हुई जांच, पशुपालन विभाग ने निर्भाई अहम भूमिका

झज्जर, 17 सितंबर सेवा संकल्प अभियान के तहत गुरुवार को डीसी वर्षा खंगवाल के मार्गदर्शन में झज्जर जिला की गौशालाओं में यज्ञ एवं पशु स्वास्थ्य जांच शिविरों का आयोजन किया गया। कार्यक्रमों का उद्देश्य गौवंश के संरक्षण, संवर्धन और बेहतर स्वास्थ्य के प्रति लोगों को जागरूक करना रहा। इस दौरान गौशालाओं में विधिवत हवन कर वातावरण को सकारात्मक और आध्यात्मिक बनाया गया। साथ ही पशुपालन विभाग की टीम ने गौ माता के स्वास्थ्य की जांच कर आवश्यक उपचार एवं

परागर्शी उपलब्ध कराया। कार्यक्रम के दौरान गौशालाओं में मौजूद पशुओं की सामान्य स्वास्थ्य जांच, तापमान, खानपान, शारीरिक स्थिति और संभावित बीमारियों से संबंधित परीक्षण किए गए। विभागীয় अधिकारियों और कर्मचारियों ने गौशाला संयातकों को पशुओं की नियमित देखभाल, स्वच्छता, संगुलित आहार और साफ पानी की उपलब्धता के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी दी। बीमार या कमजोर पशुओं की पहचान कर उनके उपचार के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिए गए। पशुपालन विभाग के उपनिदेशक डॉ. मनीष उबास ने बताया कि सेवा संकल्प अभियान के



अंतर्गत गौशालाओं में आयोजित कार्यक्रमों का उद्देश्य गौवंश के प्रति सेवा, संरक्षण और संवेदनशीलता की भावना को बढ़ावा देना है। उन्होंने कहा कि गौशालाएं केवल पशुओं के

आश्रय स्थल नहीं, बल्कि समाज की सेवा और जीवों के प्रति करुणा का प्रतीक भी हैं। ऐसे आयोजनों से लोगों में पशु सेवा के प्रति जागरूकता बढ़ती है और गौशालाओं की व्यवस्थाओं को बेहतर बनाने में सहयोग मिलता है। उन्होंने बताया कि पशुपालन विभाग द्वारा गौशालाओं में पशु स्वास्थ्य सेवाओं को प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक सहयोग प्रदान किया जा रहा है।

यह कार्यक्रम में गौशाला संयातकों, सेवादायी नागरिकों, सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों और विभागीय कर्मचारियों ने भाग लिया। उपस्थित लोगों ने गौवंश की सेवा, संरक्षण और नियमित देखभाल का संकल्प लिया।

70 हजार की सैलरी, 6 महीने की गैरहाजिरी: जब सरकारी नौकरी रिश्तेदारी से चले? वेतन जनता का, ड्यूटी से दूरी - व्यवस्था का आईना



संजय एम तराणेकर

लेखन संजय एम तराणेकर
प्रस्तुतकर्ता पिकी कुंडू सामाजिक परामर्शदाता, परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

> नौकरी का वेतन और ड्यूटी का हिसाब
> (संदर्भ - विधायक की भतीजी को बिना काम सैलरी)
>> सरकारी कुर्सी मिली तो जिम्मेदारी साथ आई,
> वेतन केवल हक नहीं, ड्यूटी की शपथ समाई।
> छह महीने ड्यूटी से दूरी, फिर भी वेतन जारी,
> सवाल उठा तो दफ्तर में हर कोई थोड़ा भारी।
> पीजी की पढ़ाई, नौकरी की ड्यूटी अपनी बात,
> दोनों साथ निभाने में नियमों का



साफ हिसाब।

> सिफारिश हो या रिश्ते, कानून सभी के लिए हो,
> सरकारी पद पे बैठों तो कर्तव्य के प्रति नेक हो।
> 70 हजार तनखाह में जनता का हैं पैसा जुड़ा,
> हर एक रुपये के पीछे विश्वास किसी का खड़ा।
> जांच अगर अब हो रही है, सच सामने आने दो,
> दोषी कौन-निर्दोष कौन नियमों को बतलाने दो।
> कविता का संपादकीय विश्लेषण यह कविता किसी व्यक्ति पर आक्षेप नहीं, बल्कि एक प्रवृत्ति पर चोट है।
> कवि ने चार सरल बिंदुओं में पूरी कहानी कह दी है।
> पंक्ति 1-4 का भाव: पहली चार

पंक्तियाँ मूल आरोप को स्थापित करती हैं - ड्यूटी नहीं, फिर भी वेतन जारी। यह सरकारी सेवा के मूल सिद्धांत 'No Work, No Pay' के खिलाफ है। कविता का सवाल है कि जब आम कर्मचारी के लिए बायोमेट्रिक और कारण बताओ नोटिस है, तो इस मामले में छूट कैसे? पंक्ति 5-8 का भाव: यहाँ कवि ने नियम की बात की है। पीजी करना गलत नहीं, लेकिन नौकरी में रहते हुए पढ़ाई के लिए दो ही रास्ते हैं - विधिवत अध्ययन अवकाश या अवैतनिक अवकाश। कविता का तर्क है कि पढ़ाई और ड्यूटी दोनों का अपना-अपना नियम है, जिसे रिश्ते से नहीं बदला जा सकता। पंक्ति 9-12 का भाव: यह कविता का सबसे मजबूत हिस्सा है। 70 हजार रुपये को कवि ने सिर्फ आँकड़ा नहीं, बल्कि 'जनता का विश्वास' कहा है। और अंत में कवि खुद ही न्यायाधीश बनने से इंकार करता है - जांच होने दो, नियमों को बोलने दो। यही लोकतंत्र की सुंदरता है। 3. संपादकीय निष्कर्ष इस कविता को छापने का उद्देश्य किसी को छवि खराब करना नहीं, बल्कि एक स्वस्थ बहस शुरू करना है। हमारी मांगें स्पष्ट हैं: - उपस्थिति रजिस्टर, अवकाश स्वीकृति और वेतन भुगतान की फाइल सार्वजनिक जांच के दायरे में



आए।

- यदि अध्ययन अवकाश स्वीकृत था तो दस्तावेज दिखाए जाएं, यदि नहीं तो वसूली और जिम्मेदारी तय हो। सरकारी नौकरी में सिफारिश से नहीं, शपथ से काम चलना चाहिए। संपादकीय टिप्पणी: सरकारी नौकरी कोई उपहार नहीं, जिम्मेदारी है। कुर्सी मिलती है तो साथ में कर्तव्य

की शपथ भी आती है।

ताजा मामला इसी शपथ पर सवाल खड़ा करता है। आरोप है कि एक जनप्रतिनिधि की भतीजी ने लगभग 6 महीने तक ड्यूटी नहीं की, बावजूद इसके उनका 70 हजार रुपये प्रतिमाह का वेतन नियमित रूप से जारी होता रहा। कारण बताया जा रहा है - पीजी की पढ़ाई। सवाल सिफारिश का नहीं,

व्यवस्था का है। यदि एक सामान्य कर्मचारी 6 दिन भी बिना सूचना के गैरहाजिर रहे तो नोटिस, वेतन कटौती और सेवा समाप्ति तक की कार्रवाई होती है। फिर एक विशेष मामले में नियम इतने लचीले कैसे हो गए? सरकारी खजाने का हर रुपया जनता के टैक्स का है। उस पर पहला हक कर्तव्यनिष्ठा का है, रिश्तेदारी

का नहीं।

अब जब जांच की बात सामने आई है, तो यह जरूरी है कि दूध का दूध और पानी का पानी हो। यह मामला एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि उस सोच का है जो सरकारी पद को निजी सुविधा समझती है। तथ्य बॉक्स: - आरोप: ड्यूटी से लगातार अनुपस्थिति के बावजूद पूर्ण वेतन

आहरण

- अबधि: लगभग 6 महीने तक कार्यालय से दूरी
- वेतनमान: लगभग 70,000 रुपये प्रतिमाह
- बताया गया कारण: पीजी / उच्च शिक्षा की पढ़ाई
- मूल प्रश्न: क्या अध्ययन अवकाश / अवकाश बिना वेतन की विधिवत स्वीकृति ली गई थी?
- वर्तमान स्थिति: विभागीय स्तर पर जांच की चर्चा
मुख्य बिंदु:
1. नियम सबके लिए एक समान हैं: सरकारी सेवा नियमावली में पढ़ाई के लिए सवैतनिक अवकाश का प्रावधान है, लेकिन उसकी एक तय प्रक्रिया है। क्या उस प्रक्रिया का पालन हुआ?
2. जवाबदेही तय हो: वेतन जारी करने वाले अधिकारी, उपस्थिति प्रमाणित करने वाले प्रभारी और लाभ लेने वाले कर्मचारी - तीनों की भूमिका की जांच जरूरी है।
3. जनता का विश्वास सर्वोपरि: 70 हजार छोटी रकम नहीं। यह उस भरोसे की रकम है जो एक आम आदमी टैक्स के रूप में सरकार को देता है। निष्कर्ष: हम किसी को दोषी घोषित नहीं कर रहे, पर मांग स्पष्ट है - पारदर्शी जांच हो, दस्तावेज सार्वजनिक हों और नियमों को बताने दिया जाए कि दोषी कौन और निर्दोष कौन है।

श्री अशोक ठाकुर को पुनः दिल्ली प्रदेश के समस्त प्रकोष्ठों का प्रभारी बनाए जाने पर जोरदार स्वागत

परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

भाजपा दिल्ली प्रदेश कार्यालय में उमड़ा कार्यक्रमों का हुजूम, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग पर लगा जाम

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी के विरुद्ध नेता एवं नेफेड, भारत सरकार के निदेशक श्री अशोक ठाकुर जी को पुनः दिल्ली प्रदेश के समस्त प्रकोष्ठों के प्रभारी की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपे जाने पर पार्टी कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों में उत्साह का माहौल देखने को मिला। जिम्मेदारी मिलने के बाद भाजपा के विभिन्न प्रकोष्ठों से जुड़े पदाधिकारी अपनी-अपनी टीमों के साथ दिल्ली प्रदेश भाजपा कार्यालय, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, पहुँचे और श्री अशोक ठाकुर जी का जोरदार स्वागत एवं अभिनंदन किया।

इस अवसर पर भाजपा दिल्ली प्रदेश के माननीय अध्यक्ष श्री हर्ष महतोत्रा जी, संगठन महामंत्री श्री पवन राणा जी, दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता जी, हरियाणा के शिक्षा मंत्री श्री नेपाल डंडा जी, दिल्ली प्रदेश के अन्य गणमान्य नेता, विभिन्न प्रकोष्ठों के प्रभारी एवं उनकी टीमों तथा बड़ी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित रहे। कार्यकर्ताओं की भारी भीड़ के चलते दीनदयाल उपाध्याय मार्ग पर जाम की स्थिति भी देखने को मिली।

नजफगढ़ आरटीआई प्रकोष्ठ की टीम ने दी शुभकामनाएँ

इस शुभ अवसर पर भाजपा दिल्ली प्रदेश, जिला



नजफगढ़ के आरटीआई प्रकोष्ठ के संयोजक श्री विकासदीप शर्मा एडवोकेट भी अपनी टीम के साथ श्री अशोक ठाकुर जी के स्वागत समारोह में पहुँचे। उनके साथ श्री मुकेश कुमार तंवर एडवोकेट, श्री अभिषेक राजपूत इंजीनियर, श्री अभिषेक सलमान एडवोकेट, राजका विधानसभा के बजरंग दल के युवा नेता श्री अंकुर तंवर जी, श्री सुशील पवार अधिवक्ता, श्री सर्वगुलिया अधिवक्ता, श्री आदित्य चौधरी अधिवक्ता, श्री अरुण धीमान अधिवक्ता, श्री अमित सिंह अधिवक्ता, श्री संदीप सिंह, श्री राजीव शर्मा अधिवक्ता, श्री मनीष राजपूत अधिवक्ता सहित अनेक कार्यकर्ता एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। श्री विकासदीप शर्मा एडवोकेट की पूरी टीम ने श्री अशोक ठाकुर जी से मुलाकात कर उन्हें पुष्पमाला

पहनाकर नई जिम्मेदारी के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ दीं। इस दौरान टीम के सदस्यों ने संगठनात्मक कार्यों को लेकर चर्चा भी की। संगठन को मजबूत करने में सक्रिय भूमिका श्री अशोक ठाकुर जी लंबे समय से संगठन से जुड़े रहे हैं और पार्टी के विभिन्न मोर्चों एवं संगठनात्मक गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाते आए हैं। संगठन को मजबूत करने, कार्यकर्ताओं को जोड़ने तथा संगठन के विस्तार की दिशा में उनकी सक्रियता को देखते हुए उन्हें पुनः सभी प्रकोष्ठों के प्रभारी की जिम्मेदारी दी गई है। स्वागत कार्यक्रम में भाजपा के विभिन्न प्रकोष्ठों के पदाधिकारी और कार्यकर्ता अपनी-अपनी टीमों के साथ मौजूद रहे। कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों ने



श्री अशोक ठाकुर जी का अभिनंदन करते हुए उन्हें नई जिम्मेदारी के लिए बधाई दी और संगठनात्मक कार्यों को लेकर विचार-विमर्श किया। इस दौरान श्री अशोक ठाकुर जी ने पार्टी नेतृत्व और कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि संगठन ने जो विश्वास उन पर जताया है, वह उनके लिए महत्वपूर्ण जिम्मेदारी के साथ-साथ संगठन की सेवा करने का अवसर भी है। उन्होंने कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर संगठन को और मजबूत करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। स्वागत समारोह में विभिन्न प्रकोष्ठों के पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं और टीमों की मौजूदगी से भाजपा दिल्ली प्रदेश कार्यालय में उत्साहपूर्ण माहौल देखने को मिला।

मुद्दे गायब, व्यक्तिगत हमले हावी लोकतंत्र के महाकुंभ में गिरता राजनीतिक संवाद का स्तर, विकसित भारत के सपने को लगा रही है धक्का

रिपोर्ट विनय कुमार मिश्र परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

देश में राजनीति का स्तर लगातार गिरता जा रहा है। चुनावी मौसम में नीतियों, विकास और सुधार के मुद्दों पर चर्चा की जगह अब एआई से तैयार फर्जी वीडियो, फोटो और मीम्स ने ले ली है। ये भ्रामक सामग्री आग में घी का काम कर रही है और जनता को गुमराह कर रही है। कभी राजनीति नेतृत्व क्षमता, विकास के वादों और सुधार के एजेंडे पर केंद्रित होती थी। मतदाता नेताओं के विजन और काम को परखते थे। लेकिन अब तस्वीर बदल गई है। सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों ही एक-दूसरे पर व्यक्तिगत आरोप लगाने, चरित्र हनन करने और भ्रामक सामग्री प्रसारित करने में जुटे हैं। सोशल मीडिया पर वायरल हो रही व्यक्तिगत टिप्पणियाँ और मीम्स ने राजनीतिक संवाद को और अधिक दूषित कर दिया है। किसी नेता की आवाज में फर्जी

ऑडियो, चेहरे के साथ छेड़छाड़ कर बनाया गया वीडियो कुछ ही मिनटों में लाखों लोगों तक पहुँच जाता है। आम मतदाता के लिए सच और झूठ में फर्क करना मुश्किल हो गया है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि इसे केवल 'डिजिटल वार' कहना भी उचित नहीं होगा। युद्ध में भी कुछ नियम होते हैं, लेकिन यह प्रवृत्ति सभ्य लोकतांत्रिक व्यवस्था में कतई स्वीकार्य नहीं हो सकती। इससे न केवल लोकतंत्र कमजोर होता है, बल्कि युवाओं में राजनीति के प्रति वितृष्णा भी बढ़ती है। 21वीं सदी में जब देश विकसित भारत का सपना देख रहा है, तब लोकतंत्र के इस मुद्दा-आधारित होना बेहद जरूरी है। आवश्यकता है कि सभी दल आचार संहिता का पालन करें, चुनाव आयोग एआई से बनी भ्रामक सामग्री पर सख्त कार्रवाई करें और जनता भी हर वायरल वीडियो को सच मानने से पहले उसकी सत्यता परखे।



टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
https://tolwa.com/about.html | tolwaIndia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा



पिकी कुंडू

विदेश से साइबर धोखाधड़ी तभी संभव है जब हमारे देश में बैठे स्थानीय सहयोगी उन्हें सुविधा प्रदान करते हैं। मामूली कमाई के लिए वे एक बड़े अंतरराष्ट्रीय गिरोह का हिस्सा बन जाते हैं। चीनी टेलीग्राम रिंग का नेक्सस दिल्ली पुलिस की IFSO इकाई ने जांच में यह उजागर किया कि भारतीय साइबर अपराधी नियमित रूप से चीनी समूहों से टेलीग्राम पर संपर्क में थे। ये समूह कमांड-एंड-कंट्रोल हब की तरह काम कर रहे थे, जो धन हस्तांतरण और क्रिप्टोकॉइन्स के माध्यम से मनी लॉन्ड्रिंग का संचालन कर रहे थे। केस: हीरो फिनकोर्प साइबर धोखाधड़ी - धोखाधड़ी राशि: ₹12.84 करोड़ हीरो फिनकोर्प के कॉर्पोरेट

खातों से siphon की गई। - गिरफ्तारी: पाँच आरोपी, जिनमें विकास (RBL बैंक रिलेशनशिप मैनेजर) और जयपुर, बीकानेर, कुरुक्षेत्र व बुलंदशहर के सहयोगी शामिल। - तरीका: 0 यस बैंक, इंडसइंड बैंक और सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया में फर्जी खाते खोले गए। 0 धन को 34 खातों में लेयरिंग कर छिपाया गया। 0 USDT क्रिप्टोकॉइन्स में बदलकर चीनी टेलीग्राम समूहों के जरिए विदेश भेजा गया। - पता चला: हीरो फिनकोर्प को HDFC बैंक अलर्ट मिले; FIR दिनांक 21 अगस्त 2026 को दर्ज हुई। - रिकवरी: पुलिस ने ₹1.70 करोड़ विभिन्न खातों में फ्रीज किए। कार्यप्रणाली (Modus Operandi) इनसाइडर की भूमिका: बैंक मैनेजर ने फर्जी खाते खुलवाए और सहयोगियों को विदेशी हेडर्स से जोड़ा। - क्रिप्टो लॉन्ड्रिंग: चोरी किए गए धन को USDT में बदलकर विदेश भेजा गया।



- रिमोट एक्सेस: सिंडिकेट ने रोग APK का उपयोग कर बैंकिंग ऐप्स और OTP पर नियंत्रण किया। लेयरिंग ट्रांसफर: छोटे-छोटे निकासी और क्रेडिट (जैसे ₹60,000 एटीएम से, ₹80 लाख 'प्रॉपर्टी गैलरी' खाते में)। 'जॉरिंग और प्रभाव' इनसाइडर खतरा: बैंक कर्मचारियों की मिलीभगत कॉर्पोरेट खातों के लिए बड़ा जोखिम है।

• क्रिप्टो लॉन्ड्रिंग: USDT में रूपांतरण से रिकवरी कठिन हो जाती है और अंतरराष्ट्रीय सहयोग आवश्यक है। कॉर्पोरेट असुरक्षा: बड़े NBFC भी सर्वर हैक और रोग ऐप्स से सुरक्षित नहीं हैं। कानूनी कार्रवाई: मामला कठोर BNS धाराओं में दर्ज किया गया है। सिफारिशें बैंक: इनसाइडर मॉनिटरिंग

मजबूत करें और नियमित ऑडिट करें। कॉर्पोरेट: बल्क ट्रांजैक्शन के लिए रियल-टाइम एनॉमली डिटेक्शन सक्षम करें। कानून प्रवर्तन: वैश्विक एक्सचेंजों के साथ मिलकर क्रिप्टो-ट्रेसिंग क्षमता बढ़ाएँ। जन जागरूकता: ग्राहकों को रोग APK आधारित रिमोट टेकओवर के जोखिमों के बारे में शिक्षित करें।

बरवाला में गुंजा 'गणपति बप्पा मोरया', 14वें श्री गणेश महोत्सव में उमड़ा आस्था का सैलाब

श्री गणेश उत्सव मंडल द्वारा वार्ड नं. 17 में भव्य आयोजन, भजन संंध्या में झूमे श्रद्धालु रिपोर्ट राजेश सलूजा, बरवाला, हिसार

श्री गणेश उत्सव मंडल बरवाला के तत्वावधान में वार्ड नं. 17 स्थित मोती लुहार वाली गली, शिव मंदिर के पास 14 वॉ श्री गणेश महोत्सव श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया गया। महोत्सव का शुभारंभ पुरोहित महाबीर शर्मा द्वारा विधिवत पूजा-अर्चना के साथ किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में समाजसेवी मुकेश मित्तल और सोएम विंडो एमिनेंट पर्सन सुरेश गोयल ने शिरकत की। मंच संचालन भाजपा जिला उपाध्यक्ष पवन शर्मा ने किया। इस अवसर पर पानीपत से पधारी प्रसिद्ध भजन कलाकारा पूजा शाह ने अपनी मधुर वाणी में गणेश वंदना व भजनों की प्रस्तुति देकर माहौल को भक्तिमय बना दिया। भजनों पर श्रद्धालु झूम उठे और पूरा क्षेत्र 'गणपति बप्पा मोरया' के जयकारों से गुंजायमान हो गया। मंडल के पदाधिकारियों ने मुख्य



अतिथियों का पटका पहनाकर स्वागत किया तथा स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर राजकुमार खेड़ी वाले, संजय सिंगला, राजेश गर्ग, बिट्टू मित्तल, भीम मित्तल, अमित रहेजा, लक्ष्मण असीजा, भूप सोनी, रामेश्वर वर्मा, सुरेंद्र सोनी, गौरी शंकर, राधेश्याम मित्तल, नरेंद्र वर्मा, बलवंत प्रजापति, सत्यवान प्रजापति, जिले सिंह जांगड़ा, शिवकुमार कौशिक सहित सैकड़ों श्रद्धालु उपस्थित रहे। तथ्य-सार बॉक्स: - आयोजक: श्री गणेश उत्सव मंडल बरवाला - आयोजन: 14 वॉ श्री गणेश

महोत्सव - स्थान: वार्ड नं. 17, मोती लुहार वाली गली, शिव मंदिर के पास, बरवाला - मुख्य अतिथि: मुकेश मित्तल, सुरेश गोयल - भजन प्रस्तुति: पूजा शाह, पानीपत - पूजन: पं. महाबीर शर्मा मुख्य बिंदु: 1. बरवाला में 14वें गणेश महोत्सव का भव्य आयोजन। 2. भजन संंध्या बनी आकर्षण का केंद्र, भक्तों में दिखा भारी उत्साह। 3. आयोजक मंडल ने अतिथियों को सम्मानित किया।

तेल के तीन रास्तों पर एक साथ ताला ! हूती हमले, होर्मुज संकट और सऊदी पाइपलाइन बंद से वैश्विक ऊर्जा बाजार में महाविस्फोट का खतरा



ब्रेंट 104 डॉलर के पार, सऊदी उत्पादन 1990 के बाद सबसे कम, दुनिया ऑयल शॉक की दहलीज पर, पर भारत बना स्थिरता की मिसाल

लेखक : एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी, परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक, गोंदिया, महाराष्ट्र

प्रस्तुतकर्ता पीकी कुंडू सह संपादक परिवहन विशेष समाचार पत्र

इंटरकनेक्टेड रिस्क का संकट सितंबर 2026 में वैश्विक ऊर्जा बाजार एक असाधारण और अभूतपूर्व अनिश्चितता के दौर से गुजर रहा है। यह संकट किसी एक घटना का परिणाम नहीं, बल्कि तीन महत्वपूर्ण ऊर्जा मार्गों पर एक साथ आए दबाव का नतीजा है। अमेरिका-ईरान युद्ध के कारण होर्मुज जलडमरूमध्य में जहाजों की आवाजाही ठप सी हो गई है, हूती विद्रोहियों के हमलों से लाल सागर और बाब अल-मंदेब का रणनीतिक मार्ग अशांत है और सऊदी अरब की 1200 किमी लंबी ईस्ट-वेस्ट पाइपलाइन ड्रोन हमलों के बाद अस्थायी रूप से बंद हो गई है।

मुख्य तथ्य - आंकड़े क्या कहते हैं ?

- होर्मुज में सन्याता : दुनिया के पांचवें हिस्से के तेल और LNG का परिवहन करने वाला होर्मुज आज लगभग बंद है। रॉयटर्स के अनुसार 17 सितंबर को यहां से केवल 3 कम्पोडिटी वैसल्स गुजरे, जबकि 10 दिन का औसत 17 जहाजों का है।
- सऊदी उत्पादन में ऐतिहासिक गिरावट : ओपेक को दिए आंकड़ों के मुताबिक सऊदी अरब का उत्पादन अगस्त में घटकर 62.4 लाख बैरल प्रतिदिन रह गया, जो जुलाई के 81 लाख बैरल से 19 लाख बैरल कम है। यह 1990 के बाद का सबसे निचला मासिक स्तर है।
- पाइपलाइन बंद - वैकल्पिक मार्ग पर भी खतरा : होर्मुज को बायपास कर लाल सागर के यानबू बंदरगाह तक प्रतिदिन 40-50 लाख बैरल तेल ले जाने वाली ईस्ट-वेस्ट पाइपलाइन बंद होने से सऊदी के निर्यात पर दोहरी मार पड़ी है। रॉयटर्स के अनुसार यानबू में भंडार केवल 5 से 7 दिनों के लिए ही पर्याप्त है। लंबे व्यवधान पर वैश्विक आपूर्ति का 4% हिस्सा प्रभावित होने का जोखिम है।
- बाजार में उथल-पुथल : 17 सितंबर के ताजा आंकड़ों में ब्रेंट क्रूड 104 डॉलर और WTI 101 डॉलर के आसपास है। 15 सितंबर को यानबू से लदान रुकने पर ब्रेंट 108.75 डॉलर तक पहुंच गया था। 16 सितंबर को सऊदी द्वारा ओमान



के सोहार बंदरगाह से शिप-टू-शिप ट्रांसफर बढ़ाने की खबर से बाजार में कुछ नरमी आई और ब्रेंट 105.83 डॉलर पर बंद हुआ। 120 डॉलर का स्तर अभी एक संभावित जोखिम है, निश्चित भविष्यवाणी नहीं।

विश्लेषण - संकट तेल से आगे जाएगा यह संकट सिर्फ कच्चे तेल तक सीमित नहीं है। महंगे क्रूड से परिवहन, पेट्रोल-डीजल, विमान ईंधन (ATF), पेट्रोकेमिकल, प्लास्टिक, उर्वरक और बिजली की लागत बढ़ेंगी।

- तेल आयात पर निर्भर देशों में चालू खाता घाटा, मुद्रा पर दबाव और महंगाई बढ़ेगी।
- पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका जैसे कम रणनीतिक भंडार वाले देशों के लिए यह विशेष चुनौती होगी।
- वैश्विक सप्लाई चैन, विशेषकर डीजल और जेट फ्यूल की उपलब्धता पर अतिरिक्त दबाव

बनेगा।

भारत - संकट में स्थिरता की मिसाल वैश्विक कोहराम के बीच भारत की स्थिति अपेक्षाकृत मजबूत है। भारत दुनिया का बड़ा आयातक जरूर है, लेकिन उसके पास तीन सुरक्षा कवच हैं :

- विविध आयात स्रोत और रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार
- विश्वस्तरीय घरेलू रिफाइनिंग क्षमता
- बड़ी सरकारी तेल कंपनियों का नेटवर्क

भारत सरकार ने 16 सितंबर से पेट्रोल, डीजल और ATF के निर्यात पर लेवी घटाकर संतुलन का संकेत दिया है, हालांकि इसका घरेलू खुदरा कीमतों पर सीधा असर नहीं है। फिर भी यदि कच्चा तेल लंबे समय तक 100-120 डॉलर के बैंड में रहता है, तो महंगाई, व्यापार घाटा और रुपये पर दबाव की सटीक निगरानी जरूरी होगी।

आगे की राह - तीन मोर्चों पर

टिकी है दिशा बाजार निष्क्रिय नहीं है। सऊदी अरब रास तनुरा, जुयैमाह और ओमान के सोहार बंदरगाह से वैकल्पिक आपूर्ति बनाए रखने की कोशिश कर रहा है। आने वाले दिनों में बाजार की दिशा तीन बातों पर निर्भर करेगी:

- होर्मुज और बाब अल-मंदेब में युद्ध और सुरक्षा स्थिति
- ईस्ट-वेस्ट पाइपलाइन की बहाली की गति
- वैकल्पिक आपूर्ति मार्गों की वास्तविक क्षमता

निष्कर्ष वर्तमान स्थिति को वैश्विक तेल आपूर्ति का पूर्ण ठप होना कहना गलत होगा, लेकिन यह कहना भी गलत होगा कि सब सामान्य है। यह असाधारण अनिश्चितता का दौर है। यही इस संकट का सबसे बड़ा सबक है - ऊर्जा सुरक्षा अब किसी एक पाइपलाइन या एक समुद्री मार्ग का विषय नहीं, बल्कि इंटरकनेक्टेड रिस्क के प्रबंधन का विषय है।



डिगी तो है, हुनर नहीं - बेरोजगार बना रही है उच्च शिक्षा

नीति आयोग की रिपोर्ट ने खोली पोल - केवल 8.25% स्नातक ही कर रहे हैं अपनी पढ़ाई से जुड़ा काम

लेखक: डॉ. शैलेश शुक्ला
प्रस्तुतकर्ता पीकी कुंडू सामाजिक परामर्शदाता

संपादकीय सार - मुख्य तथ्य एक नजर में:

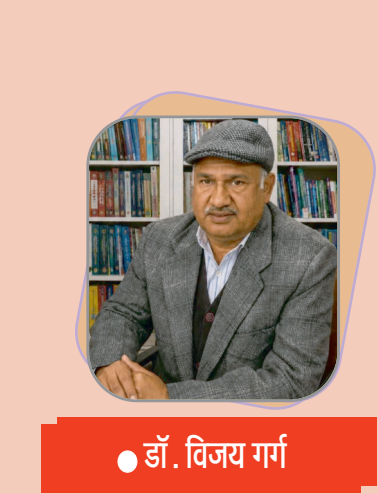
- नीति आयोग की रिपोर्ट का खुलासा: देश में केवल 8.25% स्नातक ही अपनी पढ़ाई से जुड़ा काम
- संसदीय रोजगार में हैं।
- बेरोजगारी की भयावह दर: स्नातकों में 13% बेरोजगारी, स्नातक महिलाओं में यह दर 10.4% तक।
- डिजिटली छात्रों का भोजन: देश में 3.4 करोड़ स्नातक छात्र, जिनमें से 1.13 करोड़ अकेले बीए में, और 1 करोड़ से ज्यादा बीए, बीएससी, बीकॉम में।
- कोशल की कीमत: बिना कोशल वाले स्नातक का औसत शुरुआती वेतन 12,000 रुपये, जबकि कोशल प्रशिक्षित का 19,000 रुपये।
- सरकारी नौकरी का भ्रम: 55,500 सरकारी पदों के लिए 1.86 करोड़ आवेदन - नवंबर 2024 से जुलाई 2025 के बीच।
- भारत में उच्च शिक्षा को खोसा से बेहतर भविष्य की गारंटी माना जाता है। नाता-पिता अगला सर्वसुलभ ज़ोककर बच्चों को डिग्री दिलाते हैं, इस उम्मीद में कि वह आलाक़िश बन जाएंगे। लेकिन नौजवा व्यवस्था इस उम्मीद पर पानी फेर रही है।
- आज डिग्री लान में है, पर रोजगार नहीं। सवाल गंभीर है - क्या हमारी उच्च शिक्षा व्यवस्था युवाओं को भविष्य के लिए तैयार कर रही है या उन्हें बेरोजगारी के बाजार में धकेल रही है?
- नीति आयोग की ताज़ा रिपोर्ट इस कड़वी सच्चाई को ब्रांकड़ों के साथ सामने लाती है। रिपोर्ट करती है कि शिक्षा और रोजगार के बीच तालमेल लगभग खत्म हो चुका है।
- समस्या डिग्री में नहीं, व्यवस्था में है बीए, बीएससी और बीकॉम जैसे डिग्रीयों को बेकार चलाना प्रचलन है, पर यह आधा सच है। समस्या डिग्री में नहीं, उसके पाठ्यक्रम में है। दिशाहीन तीन-बार सात किताबें रटना है, परीक्षा पास करता है, लेकिन जब नौकरी के बाजार में जाता है तो पाता करता है कि कंपनी को किताबी ज्ञान



नहीं, व्यावहारिक कोशल चाहिए। आज रोजगार की दुनिया बदल चुकी है। ऑर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डेटा, ई-कॉमर्स और डिजिटल सेवाओं ने काम का स्वरूप बदल दिया है। कंपनियों को ऐसा युवा चाहिए जो समस्या सुलझा सके, तकनीक समझे और संवाद कर सके। जबकि हमारे कोशल आज भी केवल किताब, परीक्षा और श्रंख तक सिमटे हैं। इंटरनेट, ऑर्टिफिशियल और उद्योग से जुड़ा नाममात्र का है। इसका खामियाजा परिवार अंगुताता है। युवा डिग्री के बाद फिर से कंप्यूटर कोर्स, स्पीक इंग्लिश और प्रोसेसिंग सॉफ्टवेयर के लिए भटकता है - यानी एक पढ़ाई के बाद दूसरी पढ़ाई का खर्च। सरकारी नौकरी का मायाजाल और कोशल का अभाव इस बेरोजगारी ने सरकारी नौकरी की लोड़ को और बढ़ा दिया है। 55 हजार पदों के लिए 1.86 करोड़ आवेदन इस बात का प्रमाण है कि युवा कोई और विकल्प देख ही नहीं पा रहा। वह अपने जीवन के सुनहरे 5-7 साल सिर्फ एक परीक्षा के इंटराल में गुंवा देता है। दूसरी ओर, समाज में आज भी व्यावसायिक शिक्षा को दोषमंद कर का माना जाता है। अभिभावक आज भी मानते हैं कि बीए की डिग्री इलेक्ट्रिशियन, तकनीशियन या डिजिटल एक्सपर्ट के कोशल से बड़ी है। यह सोच युवाओं

का भविष्य बर्बाद कर रही है। समाधान क्या है ? समाधान डिग्रीयों को बंद करना नहीं, बल्कि उन्हें रोजगार से जोड़ना है। 1. पाठ्यक्रम में क्रांति: बीए के साथ डिजिटल कम्प्यूटेशन, फर्स्ट और प्रशासन, बीएससी के साथ तेल-आधारित तकनीकी प्रशिक्षण और बीकॉम के साथ डिजिटल फाइनेंस और ई-कॉमर्स को अनिवार्य किया जाए। 2. पढ़ाई के साथ कमाई का अनुभव: हर स्नातक छात्र के लिए इंटरनेट और ऑर्टिफिशियल अनिवार्य हो। कॉलेजों का उद्योगों से सीधा जुड़ाव हो। 3. शिक्षक और करियर काउंसिलिंग: शिक्षकों को नई तकनीक का निरंतर प्रशिक्षण मिले। साथ ही, 18 साल की उम्र में ही हर छात्र को करियर काउंसिलिंग मिले, ताकि 25 साल की उम्र में वह भटकें नहीं। भारत की युवा आबादी हमारा सबसे बड़ा वरदान है। लेकिन यदि 3.4 करोड़ युवा हर साल ऐसी डिग्री लेकर निकलें जिसका बाजार में कोई मांग नहीं, तो यह वरदान अभिशाप बन जाएगा। अब वक़्त आ गया है कि हम यह धिनाध धिना बंद करें कि कितने युवाओं ने डिग्री ली, और यह पूछना शुरू करें कि डिग्री के बाद कितने युवा अपने पैरों पर खड़े होने लायक हैं। यही सवाल हमारी उच्च शिक्षा में सुधार की पहली सीढ़ी होगा।

यूपीआई पर संभावित शुल्क: आम आदमी पर क्या पड़ सकता है असर ?



● डॉ. विजय गर्ग

डॉ. विजय गर्ग, रिटायर्ड प्रिंसिपल परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) ने भारत में डिजिटल भुगतान की तस्वीर बदल दी है। इसने पैसे का लेन-देन तेज, सुविधाजनक और हर वर्ग के लिए आसान बनाया है। छोटी दुकानों से लेकर बड़े भुगतानों तक, करोड़ों लोग हर दिन यूपीआई का उपयोग करते हैं और आम तौर पर उन्हें सीधे लेन-देन का शुल्क नहीं देना पड़ता।

कुछ यूपीआई लेन-देन पर शुल्क लगाए जाने की संभावना ने आम उपभोक्ताओं पर इसके संभावित प्रभाव

को लेकर चर्चा को जन्म दिया है। मौजूदा लागत व्यवस्था में कोई भी बदलाव उपभोक्ताओं, छोटे व्यवसायों और डिजिटल भुगतान की आदतों को प्रभावित कर सकता है। आम आदमी के लिए छोटा-सा शुल्क भी महत्वपूर्ण हो सकता है, खासकर जब दिन में कई बार भुगतान किया जाता हो। छोटी रकम के बार-बार भुगतान करने वाले लोग लेन-देन की लागत के प्रति अधिक सचेत हो सकते हैं। छोटे दुकानदारों, रेहड़ी-पटरी वालों और सेवा प्रदाताओं को भी यह चिंता हो सकती है कि अतिरिक्त शुल्क उनकी लागत या ग्राहकों के व्यवहार को किस प्रकार प्रभावित करेगा।

हालांकि, इसका वास्तविक प्रभाव इस बात पर निर्भर करेगा कि शुल्क कौन देगा, कितना होगा और किन प्रकार के लेन-देन को इसके दायरे में रखा जाएगा। यदि व्यवस्था सोच-समझकर तैयार की जाती है, तो आम उपभोक्ताओं पर बोझ को सीमित रखा जा सकता है। इसके विपरीत, यदि शुल्क अधिक हुआ तो कुछ लोग डिजिटल भुगतान का उपयोग कम कर सकते हैं। यूपीआई ने नकदी पर निर्भरता कम करने और वित्तीय समावेशन को बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसलिए किसी भी नीतिगत बदलाव में उपभोक्ताओं, छोटे व्यवसायों और

व्यापक डिजिटल अर्थव्यवस्था की जरूरतों को ध्यान में रखना आवश्यक है।

यह चर्चा केवल शुल्क लगाने तक सीमित नहीं है। वास्तविक मुद्दा डिजिटल भुगतान प्रणाली की स्थिरता और रोजमर्रा के लेन-देन की किफायत के बीच संतुलन बनाए रखने का है। यूपीआई आधुनिक भारतीय जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। यदि भविष्य में किसी प्रकार का शुल्क लागू किया जाता है, तो पारदर्शिता, किफायत और छोटे मूल्य वाले लेन-देन की सुरक्षा यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण होगी कि डिजिटल भुगतान हर वर्ग के लिए सुलभ बना रहे।



एनईपी 2020: दृष्टि से हकीकत तक

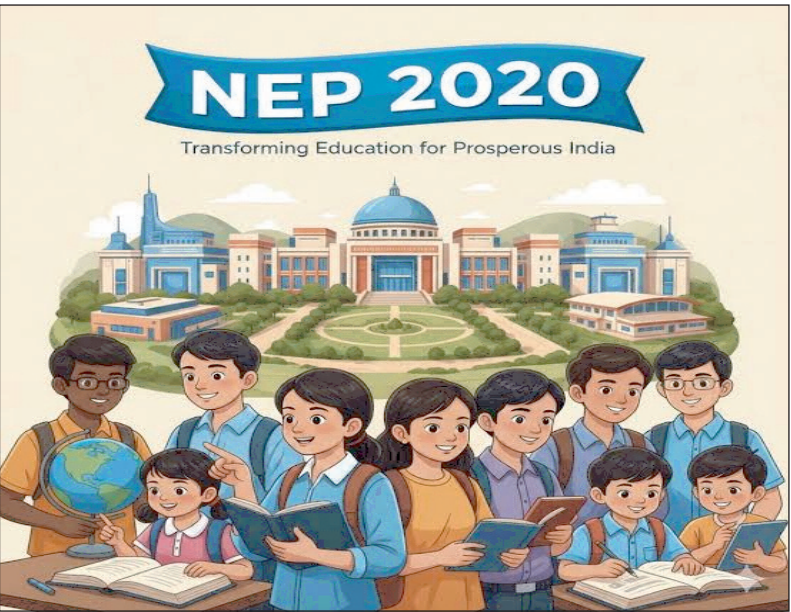
डॉ. विजय गर्ग, रिटायर्ड प्रिंसिपल परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 भारत की शिक्षा प्रणाली के प्रति दृष्टिकोण में एक महत्वपूर्ण बदलाव को दर्शाती है। यह ऐसी शिक्षा प्रणाली को कल्पना करती है जो अधिक समग्र, लचीली और बहुविध हो तथा केवल रटने के बजाय ज्ञान, कौशल, रचनात्मकता और मूल्यों के विकास पर ध्यान दे।

इस नीति का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य सीखने को अधिक अर्थपूर्ण और वास्तविक जीवन से जोड़ना है। नीति में बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान, अनुभववात्मक शिक्षा, आलोचनात्मक सोच, व्यावसायिक शिक्षा, तकनीक और विद्यार्थियों की समग्र क्षमताओं के विकास पर अधिक जोर दिया गया है। यह विद्यार्थियों को विषयों और सीखने के विभिन्न मार्गों के चयन में अधिक लचीलापन देने का भी प्रयास करती है।

हालांकि, एनईपी 2020 की सफलता अंततः इस बात पर निर्भर करेगी कि कक्षाओं के भीतर क्या होता है। नीति दस्तावेज एक दृष्टि प्रदान कर सकता है, लेकिन शिक्षकों, स्कूलों और शिक्षण संस्थानों को इस दृष्टि को दैनिक सीखने की प्रक्रियाओं में बदलना होगा। इसके लिए प्रशिक्षित शिक्षकों, उपयुक्त शिक्षण सामग्री, सहायक बुनियादी ढांचे और प्रभावी शैक्षणिक नेतृत्व की आवश्यकता है।

एक अन्य महत्वपूर्ण चुनौती यह सुनिश्चित करना है कि शिक्षा सुधार ग्रामीण और आर्थिक रूप से वंचित क्षेत्रों के विद्यार्थियों तक भी पहुंचे। डिजिटल शिक्षा, आधुनिक प्रयोगशालाएं और नई शिक्षण विधियां उपयोगी हो सकती हैं, लेकिन तकनीक और गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक संसाधनों तक पहुंच अभी भी हर जगह समान नहीं है। इसलिए कार्यान्वयन में नवाचार के साथ समानता पर भी ध्यान देना आवश्यक है।



शिक्षक इस बदलाव के केंद्र में हैं। उन्हें निरंतर व्यावसायिक विकास, प्रभावी शिक्षण विधियों को अपनाने की स्वतंत्रता और आवश्यक सहयोग मिलना चाहिए। केवल अतिरिक्त प्रशासनिक जिम्मेदारियों देने से शिक्षा में बदलाव नहीं आ सकता। प्रेरित और सशक्त शिक्षक नीति के उद्देश्यों को सार्थक कक्षा-अभ्यास में बदल सकते हैं। एनईपी 2020 शिक्षा को केवल परीक्षा-केंद्रित बनाने से आगे ले जाने के लिए भी प्रोत्साहित करती है। मूल्यांकन में समझ, अनुप्रयोग, रचनात्मकता और समस्या-समाधान की क्षमता को अधिक महत्व दिया जाना चाहिए। ऐसा बदलाव समय मांगता है, क्योंकि परीक्षा प्रणाली, शिक्षण पद्धतियां और सामाजिक अपेक्षाएं रातोंरात नहीं बदल सकती हैं।

इसलिए दृष्टि से हकीकत तक का यह सफर निरंतर कार्यान्वयन, पर्याप्त संसाधनों, नियमित मूल्यांकन तथा सरकारों, स्कूलों, शिक्षकों, अभिभावकों और समाज के सहयोग पर निर्भर करेगा। एनईपी 2020 भारतीय शिक्षा को बदलने के लिए एक व्यापक ढांचा प्रस्तुत करती है। इसकी वास्तविक सफलता केवल नीतियों, दिशा-निर्देशों या नए कार्यक्रमों से नहीं मापी जाएगी, बल्कि इस बात से मापी जाएगी कि विद्यार्थियों को बेहतर सीखने, अधिक अवसर और जीवन के लिए मजबूत तैयारी कितनी मिलती है। एनईपी 2020 की असली परीक्षा केवल नीति दस्तावेजों में नहीं, बल्कि हर दिन के कक्षा-कक्ष में दिखाई देगी।

सऊदी के पवित्र शहर के निकट ड्रोन घटना और UAE में वीजा रद्द होने का मामला - तथ्य और भ्रम

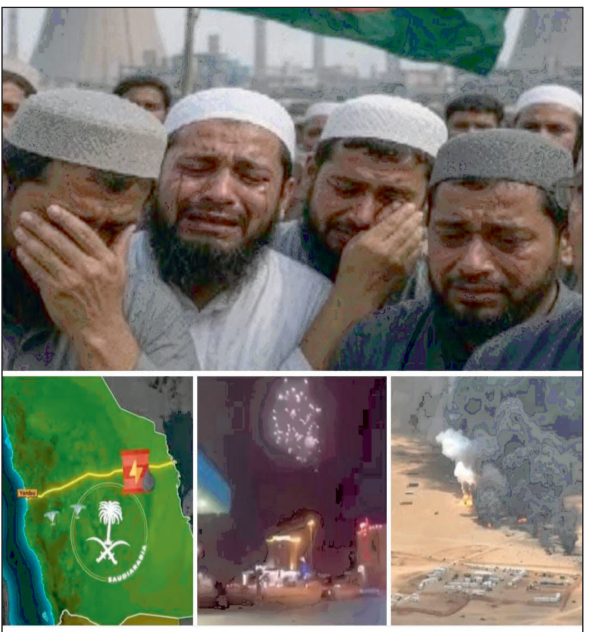
UAE में हजारों बांग्लादेशी-पाकिस्तानी वीजा रद्द, मक्का के पास ड्रोन घटना से खाड़ी में सुरक्षा पर ढाका का दावा - 4800 नागरिक फंसे, अबु धाबी ने कहा मामला किसी एक देश तक सीमित नहीं; दूसरी ओर सऊदी ने मक्का के दक्षिण में हूती ड्रोन गिराने का दावा किया

विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

नई दिल्ली। खाड़ी क्षेत्र से दो अलग-अलग घटनाओं ने दक्षिण एशियाई प्रवासी समुदाय और मुस्लिम दुनिया में धिंता बढ़ा दी है। एक तरफ संयुक्त अरब अमीरात में हजारों बांग्लादेशी और पाकिस्तानी नागरिकों के रजिस्ट्रार वीजा अमानक रह लेने की खबरें हैं, वहीं दूसरी तरफ सऊदी अरब ने मक्का के दक्षिण में एक हूती ड्रोन को मार गिराने का दावा किया है।

तथ्य क्या हैं -

- UAE वीजा मामला: बांग्लादेश के अखबार 'द डेली स्टार' और भारतीय मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार करीब 4,000 से 4,800 बांग्लादेशी नागरिकों के वीजा रद्द हुए हैं। कई लोगों को छुट्टी पर पर आने के बाद इंग्लैंड/मैसोने से सूचना मिली।
- बांग्लादेश सरकार का आधिकारिक पक्ष: जुलाई 2026 में विदेश राज्य मंत्री ने कहा था कि आधिकारिक तौर पर 626 मामलों की मजबूत तैयारी कितनी मिलती है।
- एनईपी 2020 की असली परीक्षा केवल नीति दस्तावेजों में नहीं, बल्कि हर दिन के कक्षा-कक्ष में दिखाई देगी।



नागरिक भी प्रभावित हुए हैं।

- संभावित कारण: UAE ने आधिकारिक कारण सार्वजनिक नहीं किया है। प्रवासी मामलों के जानकारी के अनुसार बड़ी हुई सुरक्षा जांच, दस्तावेज/नवीनीकरण में दूक और सोशल मीडिया गतिविधियों की स्कूट भी संभावित कारण हो सकते हैं, पर इसकी सीधी पुष्टि नहीं है।
- प्रवासी आवादी: UAE में करीब 12 लाख बांग्लादेशी रहते हैं, जो भारतीय और पाकिस्तानियों के बाद तीसरा सबसे बड़ा प्रवासी समुदाय है।
- मक्का के पास घटना: सऊदी गठबंधन ने

15-16 सितंबर 2026 को दावा किया कि उसकी वायु रक्षा ने मक्का के दक्षिण में, प्रतिबंधित हवाई क्षेत्र में प्रवेश से पहले एक हूती ड्रोन को नष्ट किया। सऊदी प्रवक्ता ने पवित्र स्थलों की सुरक्षा को 'रैड तालन' बताया।

- हूती पक्ष का इनकार: हूती प्रवक्ताओं ने मक्का को निशाना बनाने के दावे को खारिज करते हुए कहा कि उनके हमले तेल सुविधाओं और सैन्य ठिकानों पर थे।
- अंतरराष्ट्रीय प्रतिक्रिया: पाकिस्तान, तुर्की, बांग्लादेश, मालदीव, UAE और OIC ने घटना की निंदा की है।

मुख्य बिंदु - संपादकीय विश्लेषण के लिए:

- वीजा संकट मानवीय और आर्थिक नुक़ा है, कूटनीतिक साक्षरता नहीं: हजारों नागरिक, छोटे व्यवसायों जो सालों से UAE में हैं, अमानक वीजाओं से जूझ रहे हैं। उनके परिवार और रजिस्ट्रार पर सीधा असर है। इसे भारत-पाक-बांग्लादेश की कूटनीति से जोड़ना तथ्यात्मक रूप से सही नहीं है।
- कानून का पालन सबसे बड़ा बचाव: बांग्लादेश सरकार ने स्वयं अपने नागरिकों से अपील की है कि मजबूत देश के कानूनों, विशेषकर सोशल मीडिया पर राजनीतिक टिप्पणियों से बचें।
- मक्का की सुरक्षा पर सवाल नहीं, क्षेत्रीय संघर्ष का विस्तार है: सऊदी का दावा 2017 के बाद दूसरी बार मक्का को निशाना बनाने का है। यह घटना यमन संघर्ष और ताल सानर में बढ़ते तनाव का हिस्सा है, न कि सऊदी नेतृत्व की आश्रया के प्रति तात्पर्यवादी का प्रमाण।
- दो घटनाओं को आपस में जोड़ने से बचना चाहिए: UAE का वीजा प्रशासनिक मामला है, जबकि मक्का के पास ड्रोन घटना सुरक्षा मामला है। दोनों को एक साथ जोड़कर 'MBS की सत्ता' या 'मक्का अशुभस्थिति' जैसी टिप्पणियां करना वास्तविकता के तथ्यपरक मानदंडों पर उचित नहीं है।
- निष्कर्ष: समाचार-पत्र में इस विषय को सनसनी के बजाय दो अलग-अलग सत्यापित खबरों के रूप में प्रस्तुत करना अधिक विश्वसनीय होगा। एक तरफ प्रवासी नागरिकों के पुनर्वास के लिए कूटनीतिक प्रयासों की मांग, दूसरी तरफ पवित्र शहरों की सुरक्षा के लिए क्षेत्रीय तनाव कम करने की अपील।



ऑंकार प्रसाद भारद्वाज
सामाजिक समरसता प्रमुख
विश्व हिंदू परिषद इंद्रप्रस्थ प्रांत

प्रस्तुतकर्ता :- पीकी कुंडू सह-
संपादक परिवहन विशेष

— ऑंकार प्रसाद
भूमिका : विकास के बीच मनुष्य की
तलाश

आज का विश्व विज्ञान, तकनीक और अर्थव्यवस्था की अभूतपूर्व उपलब्धियों के शिखर पर खड़ा है। मानव ने प्रकृति के अनेक रहस्यों को समझ लिया है, दूरियों को समेट दिया है और अपनी सुविधाओं के लिए ऐसी अद्भुत व्यवस्थाएँ निर्मित की हैं, जिनकी कल्पना कुछ शताब्दियों पूर्व असंभव प्रतीत होती थी। किंतु इस चकाचौंध के बीच एक प्रश्न निरंतर हमारे सामने खड़ा है—क्या मनुष्य वास्तव में उतना ही विकसित हुआ है, जितना उसका विज्ञान और उसका भौतिक संसार ?

विज्ञान ने हमारे हाथों को शक्ति दी है, पर क्या उसने हमारे हृदय को भी करुणा दी है ? तकनीक ने मनुष्यों के बीच की भौतिक दूरियाँ घटाई हैं, पर क्या उसने मनो की दूरियाँ भी कम की हैं ? अर्थव्यवस्था ने जीवन को समृद्ध बनाया है, किंतु क्या उस समृद्धि ने जीवन को अधिक सार्थक भी बनाया है ?

आर्थिक समृद्धि की अंधी दौड़ में मनुष्य धीरे-धीरे उन मानवीय मूल्यों से दूर होता जा रहा है, जो उसके जीवन को मनुष्यता प्रदान करते हैं। धर्म के व्यापक और शाश्वत स्वरूप को संकुचित करके जब केवल पूजा-पद्धति अथवा संप्रदाय तक सीमित कर दिया जाता है, तब धर्म की वह शक्ति ओझल हो जाती है, जो मनुष्य को सत्य, करुणा, न्याय, संयम, सेवा और सह-अस्तित्व का मार्ग दिखती है।

जब अर्थ साधन से साध्य बन जाता है, तब मानव जीवन का गौरव संकट में पड़ जाता है। इतिहास इसका साक्षी है कि धन, सत्ता, वर्चस्व और संकीर्ण धार्मिक आग्रहों के कारण मनुष्य ने बार-बार मनुष्य का रक्त बहाया है।

आज आवश्यकता किसी एक व्यवस्था को नकारने की नहीं, बल्कि ऐसी समन्वित दृष्टि विकसित करने की है, जो अर्थ और धर्म, अधिकार और कर्तव्य, स्वतंत्रता और उत्तरदायित्व तथा विज्ञान और मानवीय मूल्यों के बीच संतुलन स्थापित कर सके। भारतीय मनीषा ने अर्थ को जीवन का आवश्यक साधन माना है, किंतु उसे धर्म के अनुशासन से जोड़ा है। अर्थ जीवन को साधन देता है, पर धर्म उसे दिशा देता है। अर्थ शक्ति प्रदान करता है, तो धर्म उस

शक्ति के सदुपयोग का विवेक देता है। जहाँ केवल स्वार्थ की प्रधानता होती है, वहाँ अर्थ जीवन पर शासन करने लगता है; और जहाँ लोकमंगल, करुणा, संयम तथा निष्काम सेवा का भाव जागृत होता है, वहाँ धर्म अपने वास्तविक स्वरूप में प्रकट होता है।

महर्षि याज्ञवल्क्य का कथन है—
“स्मृत्योर्विरोधे न्यायस्तु बलवान्-
व्यवहारतः।

अर्थशास्त्रातु बलवद्धर्मशास्त्रमिति स्थितिः।”

अर्थात् व्यवहार में न्याय का महत्त्व है, किंतु अर्थशास्त्र से भी अधिक बलवान धर्मशास्त्र माना गया है, क्योंकि धर्म ही जीवन और समाज को नैतिक दिशा प्रदान करता है।

इसी समन्वय-दृष्टि को ऋग्वेद का अमर मंत्र अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करता है—

“संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।

देवा भागं यथा पूर्वं सज्जानाना उपासते॥”

(ऋग्वेद 10.191.2)

अर्थात्—हम साथ चले, साथ विचार करें और हमारे मन एक हों। जिस प्रकार पूर्वकाल में देवगण सामंजस्यपूर्वक अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते थे, उसी प्रकार हम भी एकत्व भाव से समाज और विश्व के कल्याण के लिए कार्य करें।

यह केवल एक वैदिक प्रार्थना नहीं है; यह मानव-समाज के संगठन, सहयोग और विश्व-समन्वय का जीवन-दर्शन है।

आज विश्व-शांति और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के लिए अनेक संस्थाएँ और समझौते अस्तित्व में हैं। किंतु स्थायी शांति केवल संधियों और समझौतों से संभव नहीं। बाहरी समझौते तभी स्थायी होते हैं, जब मनुष्य के भीतर करुणा, न्याय, आत्मीयता और परस्पर सम्मान का भाव जागृत हो।

इसलिए विश्व-समन्वय का वास्तविक मार्ग राजनीतिक शक्ति अथवा आर्थिक प्रभुत्व से नहीं, बल्कि मानवीय चेतना के पुनर्जागरण से होकर जाता है।

यही भारतीय चिंतन की विशेष देन है और आज की मानवता की सबसे बड़ी आवश्यकता भी।

@@@@

धर्म का वास्तविक स्वरूप और राजा शिवि का आदर्श विश्व-समन्वय की चर्चा करते समय सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि विविधताओं से भरे इस संसार को कौन-सा सूत्र एकता में बाँध सकता है ?

भारतीय चिंतन का उत्तर है—धर्म।

परंतु यहाँ धर्म का अर्थ किसी विशेष पंथ, संप्रदाय अथवा उपासना-पद्धति से नहीं है। धर्म वह जीवन-मूल्य है, जो सत्य, न्याय, करुणा, संयम, कर्तव्य और लोकमंगल को प्रतिष्ठित करता है। जो जीवन और समाज को धारण करता है, वही धर्म है।

भारतीय परंपरा ने धर्म को केवल ग्रंथों के सिद्धांतों में नहीं रखा; उसे जीवन के

आदर्श चरित्रों में मूर्त रूप दिया। राजा शिवि की कथा इसका अत्यंत प्रेरक उदाहरण है।

एक बार एक भयभीत कबूतर अपने प्राणों की रक्षा के लिए उड़ता हुआ राजा शिवि की गोद में आ गिरा। उसके पीछे एक बाज था। बाज ने राजा से कहा—

“राजन्! यह मेरा स्वाभाविक आहार है। इसे आप मुझे सौंप दीजिए।”

राजा के सामने धर्म का एक अत्यंत गूढ़ प्रश्न उपस्थित था। यदि वे कबूतर को बाज को सौंप देते, तो शरणगत की रक्षा का धर्म भंग होता; और यदि बाज को उसके आहार से वंचित करते, तो उसके प्राकृतिक अधिकार का हनन होता।

राजा शिवि ने किसी एक पक्ष को पराजित करने के बजाय ऐसा समाधान खोजा, जिसमें दोनों के न्यायपूर्ण हितों का समन्वय हो सके।

उन्होंने कहा कि कबूतर के भार के बराबर मांस वे अपने शरीर से देंगे।

तराजू के एक पलड़े में कबूतर रखा गया और दूसरे में राजा अपने शरीर का मांस रखते गए। किंतु आश्चर्य ! कबूतर का पलड़ा फिर भी भारी रहा।

अंततः राजा स्वयं तराजू पर बैठ गए।

उनका संदेश स्पष्ट था—धर्म केवल उपदेश नहीं, आवश्यकता पड़ने पर स्वयं को समर्पित करने का साहस भी है।

तभी बाज और कबूतर ने अपना दिव्य स्वरूप प्रकट किया। वे देवता थे, जो राजा की धर्मनिष्ठा की परीक्षा लेने आए थे।

राजा शिवि की यह कथा केवल त्याग की कथा नहीं है। यह धर्म के उस स्वरूप को सामने रखती है, जिसमें न्याय, करुणा, कर्तव्य और समन्वय एक साथ उपस्थित होते हैं।

धर्म किसी एक पक्ष की विजय का नाम नहीं; धर्म वह है, जो संघर्षरत पक्षों के न्यायपूर्ण हितों के बीच संतुलन स्थापित करे।

आज का विश्व भी अनेक संघर्षों से घिरा है—राष्ट्र बनाम राष्ट्र विचारधारा बनाम विचारधारा ,समुदाय बनाम समुदाय और ,व्यक्ति बनाम व्यक्ति*

इन संघर्षों के पीछे अक्सर एक ही मानसिकता काम करती है—रूकेबल मेरा दृष्टिकोण ही सत्य है।र

यहीं से संवाद समाप्त होता है और संघर्ष आरंभ होता है।

राजा शिवि हमें सिखाते हैं कि वास्तविक समाधान दूसरे को पराजित करने में नहीं, बल्कि अपने अहंकार को पराजित करने में है।

जब अधिकार के साथ कर्तव्य, शक्ति के साथ उत्तरदायित्व और स्वतंत्रता के साथ संयम जुड़ता है, तभी न्याय जन्म लेता है और न्याय से स्थायी शांति का मार्ग प्रशस्त होता है।

आज विश्व को ऐसे नेतृत्व की आवश्यकता है, जो शक्ति का प्रदर्शन करने के बजाय करुणा, न्याय, न्याय और आत्मसंयम को अपनी शक्ति बनाए।

यही धर्म है।

यही समन्वय है।

और यही विश्व-कल्याण का मार्ग है।

विविधता में समन्वय : चिकित्सा से

धर्म तक प्रकृति का मूल स्वभाव ही विविधता है। सृष्टि का सौंदर्य उसकी एकरूपता में नहीं, बल्कि उसकी विविधता में निहित है।

एक ही वृक्ष पर लगे सभी पत्ते समान नहीं होते। एक ही परिवार के सदस्यों के स्वभाव भिन्न होते हैं। विभिन्न नदियाँ अलग-अलग दिशाओं से बहती हैं, किंतु अंततः समुद्र में जाकर मिलती हैं।

विविधता विरोध नहीं है; विविधता प्रकृति की रचना-पद्धति है।

समस्या तब उत्पन्न होती है, जब हम विविधता को स्वीकार करने के बजाय एकरूपता को ही श्रेष्ठता का प्रमाण मानने लगते हैं।

चिकित्सा-विज्ञान इसका सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करता है।

आज चिकित्सा के क्षेत्र में एलोपैथी, आयुर्वेद, होम्योपैथी, यूनानी, योग, प्राकृतिक चिकित्सा और अनेक अन्य पद्धतियाँ विकसित हुई हैं। उनकी कार्य-प्रणाली अलग है, निदान की दृष्टि अलग है और उपचार की विधियाँ भी अलग-अलग हैं। फिर भी उनका मूल उद्देश्य एक है—मनुष्य के स्वास्थ्य की रक्षा और उसके जीवन की सुरक्षा।

इसी प्रकार आधुनिक चिकित्सा में हृदय रोग विशेषज्ञ, शल्य-चिकित्सक, बाल रोग विशेषज्ञ, अस्थि रोग विशेषज्ञ तथा अन्य अनेक विशेषज्ञ होते हैं। उनकी विशेषज्ञताएँ भिन्न हैं, लेकिन हम सभी को सम्मानपूर्वक डॉक्टर कहते हैं।

क्या कोई हृदय रोग विशेषज्ञ यह कहता है कि क्योंकि मैं हृदय का उपचार करता हूँ, इसलिए अस्थि रोग विशेषज्ञ का कोई महत्त्व नहीं ?

नहीं।

वास्तव में चिकित्सा की शक्ति ही विशेषज्ञताओं की इस विविधता में निहित है।

यदि चिकित्सा के क्षेत्र में विविधता सहयोग की शक्ति बन सकती है, तो जीवन-दर्शन और धर्म के क्षेत्र में विविधता विभाजन का कारण क्यों बने ?

समस्या धर्म में नहीं, मनुष्य के दुराग्रह में है।

जब मनुष्य अपनी उपासना-पद्धति को ही धर्म का संपूर्ण स्वरूप मान लेता है, तब वह दूसरों के मार्ग को अस्वीकार करने लगता है। जबकि धर्म का व्यापक स्वरूप इससे कहीं अधिक विशाल है।

धर्म मनुष्य को सत्य, करुणा, संयम, सेवा, न्याय और सदाचार की ओर ले जाने वाली जीवन-दृष्टि है।

उपनिषद् की यह प्रार्थना इसी सार्वभौमिक आकांक्षा को व्यक्त करती है—

असतो मा सद्गमय।

तमसो मा ज्योतिर्गमय॥

मृत्योर्माऽमृतं गमय।

अर्थात्—*हमें प्रभु ! हमें असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर और मृत्यु से अमरत्व की ओर ले चलिए।

क्या सत्य की आकांक्षा किसी एक समुदाय की हो सकती है ?

क्या प्रकाश की इच्छा किसी एक

सभ्यता तक सीमित हो सकती है ?

क्या मनुष्य का आंतरिक उत्कर्ष किसी एक पंथ की संपत्ति हो सकता है ?

निश्चित ही नहीं।

यही वे सार्वभौमिक मूल्य हैं, जो मानवता को एक सूत्र में बाँध सकते हैं। इसलिए धर्म और पंथ के बीच का अंतर समझना आवश्यक है। पंथ किसी विशिष्ट आध्यात्मिक मार्ग का नाम हो सकता है, जबकि धर्म जीवन को धारण करने वाले सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों का आधार है।

मार्ग अनेक हो सकते हैं; अनुभव अलग हो सकते हैं; परंतु मानव के आंतरिक उत्कर्ष और समस्त सृष्टि के कल्याण की आकांक्षा सार्वभौमिक है।

विश्व-समन्वय का अर्थ अपनी पहचान मिटाना नहीं है। इसका अर्थ है—अपनी विशिष्टता को सुरक्षित रखते हुए दूसरे की विशिष्टता का सम्मान करना।

जहाँ सम्मान है, वहाँ संवाद जन्म लेता है।

जहाँ संवाद है, वहाँ विश्वास जन्म लेता है।

जहाँ विश्वास है, वहाँ सहयोग संभव होता है।

और जहाँ सहयोग है, वहाँ स्थायी शांति और समरसता का निर्माण होता है।

धर्म का विकास और विश्व-समन्वय की दिशा

प्रकृति में विकास कभी एक क्षण में पूर्ण नहीं होता। परिवर्तन एक सतत प्रक्रिया है। जीव-जगत का विकास क्रमशः हुआ, मानव की चेतना विकसित हुई, सभ्यताएँ बनीं और उनके साथ मनुष्य का नैतिक एवं सामाजिक बोध भी विकसित होता गया।

धर्म भी मानव की इसी चेतना-यात्रा का एक महत्त्वपूर्ण आयाम है।

विभिन्न समाजों और सभ्यताओं ने समय, स्थान और परिस्थितियों के अनुसार धर्म के विभिन्न पक्षों को विशेष महत्त्व दिया। कहीं करुणा को प्रधानता मिली, कहीं सेवा को, कहीं अहिंसा को, कहीं तप और त्याग को, तो कहीं प्रेम और सत्य को।

इनमें से प्रत्येक मूल्य मानवता के लिए महत्त्वपूर्ण है। किंतु किसी एक मूल्य को धर्म की संपूर्णता मान लेना उचित नहीं होगा।

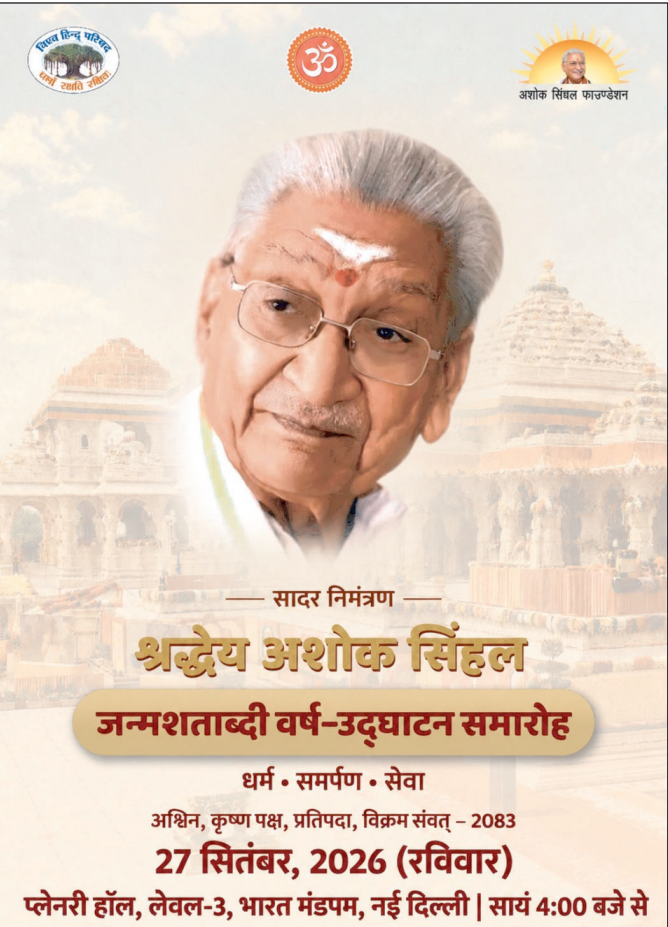
ये सभी उस विराट सत्य के विभिन्न आयाम हैं, जिसे मानवता युगों से समझने का प्रयास करती रही है।

इसलिए किसी एक परंपरा के अनुभव को संपूर्ण सत्य मानकर दूसरों को अस्वीकार करने के बजाय आवश्यक है कि हम एक-दूसरे से सीखें।

श्रेष्ठता का अर्थ वर्चस्व नहीं, सहयोग है।

जो आगे बढ़ चुके हैं, उनका दायित्व है कि वे पीछे रह गए लोगों का हाथ थामें। और जो अभी पीछे हैं, उन्हें आगे बढ़ने वालों के अनुभवों से सीखने में संकोच नहीं करना चाहिए।

ज्ञान का उद्देश्य किसी पर प्रभुत्व



स्थापित करना नहीं, बल्कि अज्ञान के अंधकार को दूर करना है।

आज विश्व की सबसे बड़ी समस्या केवल संसाधनों का अभाव नहीं, बल्कि विश्वास का अभाव है।

विज्ञान ने महाद्वीपों के बीच की दूरी घटा दी है, लेकिन मनुष्यों के बीच मानसिक दूरी कई बार और बढ़ गई है। संचार के साधन बढ़े हैं, पर संवाद की गहराई कम हुई है। प्रतिस्पर्धा बढ़ी है, लेकिन सहयोग का भाव कमजोर पड़ा है।

फलतः समृद्धि के बावजूद मानवता असुरक्षा, हिंसा, तनाव और अविश्वास से मुक्त नहीं हो पा रही है।

यदि विश्व-समन्वय स्थापित करना है, तो हमें एक नई संस्कृति विकसित करनी होगी—विरोध से पहले परिचय, निर्णय से पहले संवाद और असहमति के बीच भी सम्मान की संस्कृति।

किसी व्यक्ति, समाज अथवा परंपरा को समझे बिना उसका विरोध करना अज्ञान का परिचायक है। समझने का प्रयास संवाद को जन्म देता है और संवाद विश्वास का आधार बनता है।

हमारा लक्ष्य ऐसा जीवन होना चाहिए, जो अधिक सरल, अधिक सार्थक, अधिक न्यायपूर्ण और अधिक सहयोगपूर्ण हो। धर्म और अर्थ दोनों मानव जीवन के साधन हैं; मानव जीवन उनका साधन नहीं है।

जब यह सत्य हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक व्यवहार का आधार बनेगा, तभी अर्थ मानवता का सहयोगी बनेगा और धर्म लोकमंगल का पथप्रदर्शक।

उपसंहार : मानवता ही सर्वोच्च पहचान

विश्व-समन्वय किसी राजनीतिक समझौते, आर्थिक गठबंधन अथवा शक्ति-संतुलन मात्र से संभव नहीं होगा। उसका वास्तविक आधार मनुष्य के

अंतःकरण में जागृत होने वाली करुणा, आत्मीयता, विनम्रता और परस्पर सम्मान है।

जब मनुष्य अपने अहंकार के आवरण को हटाकर दूसरे मनुष्य में भी उसी चेतना का दर्शन करेगा, तब धेद की दीवारें धीरे-धीरे स्वयं टूटने लगेंगी।

हमें यह स्वीकार करना होगा कि विविधता हमारी कमजोरी नहीं, हमारी शक्ति है। विभिन्न विचार, परंपराएँ, भाषाएँ, संस्कृतियाँ और जीवन-पद्धतियाँ मानव सभ्यता की सामूहिक संपदा हैं।

आवश्यकता उन्हें मिटाने की नहीं, उन्हें समन्वय के सूत्र में पिरोने की है। भारतीय ऋषियों की वाणी आज भी हमें पुकारती है—

रसंगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।

आइए, हम साथ चलें।

साथ विचार करें।

एक-दूसरे को समझें।

एक-दूसरे का सम्मान करें।

और मिलकर ऐसा विश्व बनाएँ, जहाँ विविधता विभाजन का नहीं, समन्वय का आधार बने;

जहाँ धर्म संघर्ष का नहीं, सद्भाव का माध्यम बने;

जहाँ अर्थ मानवता का साधन बने, मानवता अर्थ का साधन नहीं;

और जहाँ मनुष्य की सर्वोच्च पहचान किसी संकीर्ण सीमा से नहीं, बल्कि मानवता से हो।

तभी—

असतो मा सद्गमय।

तमसो मा ज्योतिर्गमय।

मृत्योर्माऽमृतं गमय॥

की प्रार्थना केवल एक वैदिक मंत्र बनकर नहीं रहेगी, बल्कि मानव सभ्यता के जीवन-दर्शन का आधार बनेगी।

यही विश्व-समन्वय का मार्ग है।

2.20 करोड़ का इनामी माओवादी असीम मंडल ने डाले हथियार - कोलकाता STF के सामने आत्मसमर्पण, सुरक्षा एजेंसियों को बड़ी सफलता....

झारखंड सरकार का 1 करोड़ और ओडिशा का 1.20 करोड़ का इनाम था घोषित ; सारंडा जोन का सक्रिय कमांडर था, 55 आपराधिक मामले दर्ज - बंगाल के फूलचुक गांव का है निवासी

डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक, बिसरा / सुंदरगढ़/ कोलकता / झारखंड



झारखंड-ओडिशा में माओवाद को बड़ा झटका झारखंड में माओवादियों के खिलाफ चल रहे सघन अभियान के बीच सुरक्षा एजेंसियों को बड़ी कामयाबी मिली है। झारखंड के कुख्यात और मोस्ट वांटेड माओवादी असीम मंडल उर्फ आकाश, तिमिर, मनोज, दीपक और राकेश ने गुरुवार सुबह कोलकाता STF के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया।

सुरक्षा एजेंसियों के लिए इसे झारखंड और आसपास के क्षेत्रों में माओवादी

गतिविधियों के खिलाफ चल रहे अभियानों में महत्वपूर्ण घटनाक्रम के रूप में देखा जा रहा है।

मुख्य बिंदुवार - कौन है असीम मंडल ?

बिंदु 1: प्रोफाइल और इनाम

- नाम: असीम मंडल उर्फ आकाश /

तिमिर / मनोज / दीपक / राकेश

- मूल निवास: उत्तर फूलचुक गांव,

चंद्रकोणा थाना, पश्चिम मेदिनीपुर जिला,

पश्चिम बंगाल

- कुल इनाम: 2.20 करोड़

- झारखंड सरकार: 1 करोड़

- ओडिशा सरकार: 1.20 करोड़

- आपराधिक रिकॉर्ड: विभिन्न थानों में कुल 55 मामले दर्ज

- कार्यक्षेत्र: लंबे समय तक माओवादी

गतिविधियों के लिहाज से अतिसंवेदनशील सारंडा क्षेत्र में सक्रिय रहा

बिंदु 2: आत्मसमर्पण कैसे हुआ ? -

पृष्ठभूमि

- झारखंड में केन्द्रीय सुरक्षा बलों और राज्य पुलिस द्वारा लगातार माओवादी विरोधी अभियान चलाए जा रहे हैं।

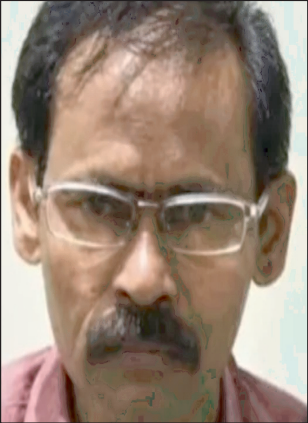
- इस दबाव के कारण संगठन के कई सदस्यों के पड़ोसी राज्यों (बंगाल, ओडिशा) की ओर चले जाने की बात सामने आती रही है।

- इसी दबाव के माहौल में असीम मंडल का कोलकाता में STF के सामने सरेंडर हुआ।

बिंदु 3: पहले भी हुए थे सरेंडर इससे पहले इसी ठेठवर्क से जुड़ी एक और बड़ी

खबर आई थी:

- स्थान: पश्चिम बंगाल का बांकोड़ा जिला



- सरेंडर करने वाले: असीम मंडल के दस्ते के 3 माओवादी

1. रामप्रसाद माडॉ - क्षेत्रीय समिति सदस्य, 15 लाख इनामी

2. मीता उर्फ नयनतारा - जोनल कमांडर, रामप्रसाद की पत्नी, 10 लाख इनामी

3. गौरी - दस्ते की सदस्य

संपादकीय टिप्पणी: 2.20 करोड़ के इनामी का आत्मसमर्पण केवल एक व्यक्ति का हथियार डालना नहीं है, यह माओवादी संगठन के मनोबल पर चोट है। सारंडा जैसे दुर्गम और रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण जोन में सक्रिय कमांडर का इस तरह टूटना बताता है कि लगातार सुरक्षा अभियान, विकास और सरेंडर नीति का संयुक्त असर हो रहा है।

अब जरूरी है कि सुरक्षा एजेंसियां असीम मंडल से मिली जानकारी का उपयोग कर सारंडा और बिसरा-सुंदरगढ़ बेल्ट में बचे नेटवर्क को ध्वस्त करें और आत्मसमर्पण करने वालों के पुनर्वास को पारदर्शी बनाएं ताकि अन्य माओवादियों के लिए भी मुख्धारा में लौटने का रास्ता खुले।

नेशनल ड्राइवर डे पर अनूठा सम्मान - ड्राइवरों के लिए लगा स्वास्थ्य जांच शिविर, “स्वस्थ चालक ही सुरक्षित परिवहन की रीढ़”

दिल्ली टैक्सी एंड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन की पहल; शुगर, रक्त जांच, नेत्र परीक्षण, सरकार से विशेष स्वास्थ्य योजना और वीकेंड OPD की मांग

प्रस्तुतकर्ता पीकी कुंडू सह संपादक परिवहन विशेष समाचार पत्र

शुभकामना नहीं, सेहत का तोहफा आमतौर पर नेशनल ड्राइवर डे पर माला-पागड़ी और सम्मान पत्र दिए जाते हैं, लेकिन इस बार दिल्ली टैक्सी एंड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन ने लोक से हटकर ड्राइवरों का सम्मान किया। बाराखंबा रोड पर ड्राइवरों के लिए विशेष स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित कर यह संदेश दिया गया कि उनके स्वास्थ्य की चिंता समाज और परिवहन क्षेत्र की सामूहिक जिम्मेदारी है।

मुख्य बिंदुवार - क्या हुआ शिविर में ?

बिंदु 1: तथ्य - क्या-क्या जांच हुई ?

- स्थान: बाराखंबा रोड, नई दिल्ली

- आयोजक: दिल्ली टैक्सी एंड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन

- जांचें: शुगर टेस्ट, रक्त जांच, नेत्र परीक्षण तथा अन्य आवश्यक स्वास्थ्य परीक्षण

- टीम: अनुभवी चिकित्सकों और स्वास्थ्य विशेषज्ञों की टीम ने बड़ी संख्या में पहुंचे ड्राइवरों की जांच कर परामर्श दिया।

परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक की विशेष रिपोर्ट - दिल्ली की सफाई व्यवस्था दिल्ली कूड़े के ढेर पर, जवाबदेही किसकी?

चालान काटने में तेजी, सफाई व्यवस्था में देरी क्यों? MCD और दिल्ली सरकार से जनता के 10 सीधे सवाल जब राजधानी के नागरिक कूड़े, दुर्गंध और अस्वच्छ वातावरण के बीच रहने को मजबूर हों, तो सवाल केवल गंदगी का नहीं, बल्कि शासन, स्वास्थ्य और जवाबदेही का भी है।

रिपोर्ट अभिषेक राजपूत परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

देश की राजधानी दिल्ली को आधुनिक, स्वच्छ और रहने योग्य शहर बनाने के दावे लगाता किए जाते हैं। लेकिन दूसरी ओर, शहर के अनेक इलाकों में सड़क किनारे जमा कूड़ा, खुले में पड़ा मिश्रित कचरा, दुर्गंध, गंदे नाले और कूड़े के आसपास घूमते आवारा पशु नागरिकों के सामने एक अलग तस्वीर पेश करते हैं। सवाल यह नहीं है कि दिल्ली में कूड़ा पैदा क्यों होता है। सवाल यह है कि कूड़ा उठाने, उसका वैज्ञानिक प्रबंधन करने और नागरिकों को स्वच्छ वातावरण देने की जिम्मेदारी निभाने वाली व्यवस्था आखिर कितनी प्रभावी है?

दिल्ली सरकार के आधिकारिक दस्तावेजों के अनुसार, नगर निकायों की अपने-अपने अधिकार क्षेत्र में ठोस कचरा प्रबंधन की जिम्मेदारी है। MCD के लिए इसमें कचरे का संग्रह, प्रबंधन और निस्तारण शामिल है। ऐसे में MCD से यह पूछना स्वाभाविक है कि यदि जिम्मेदारी स्पष्ट है, तो कई इलाकों में सफाई व्यवस्था अब भी असमान और अव्यवस्थित क्यों दिखाई देती है?

सरकार से जनता का सीधा सवाल राजनीतिक रूप से "ट्रिपल ईजन सरकार" का दावा केंद्र, दिल्ली सरकार और स्थानीय निकाय के बीच बेहतर समन्वय की कमी करता है। लेकिन नागरिकों के लिए किसी भी सरकार की सफलता का वास्तविक पैमाना सड़क, गली, बाजार और घर के बाहर मिलने वाली सुविधा है।

यदि तीनों स्तरों के बीच बेहतर समन्वय का दावा किया जाता है, तो जनता जानना चाहती है:

- * क्या इस समन्वय का परिणाम नियमित कूड़ा उठाने, बेहतर सफाई, वैज्ञानिक निस्तारण और समयबद्ध शिकायत समाधान के रूप में दिखाई दे रहा है?

- * और यदि नहीं, तो जिम्मेदारी किस स्तर पर तय होगी—नीति बनाने वाली सरकार की, निगरानी करने वाले अधिकारियों की या काम करने वाले ठेकेदारों की?

चालान जरूरी है, लेकिन सफाई भी उतनी ही जरूरी है स्वच्छता नियमों का पालन करवाना प्रशासन का आवश्यक दायित्व है। सार्वजनिक स्थानों पर कचरा फेंकने, अवैध डंपिंग और अन्य उल्लंघनों पर कार्रवाई होनी चाहिए। लेकिन नागरिकों का सवाल यह है कि क्या नियमों का पालन करवाने वाली व्यवस्था अपने सेवा-मानकों का भी उतनी ही गंभीरता से पालन कर रही है?

यदि किसी नागरिक या दुकानदार पर कूड़ा फैलाने के लिए चालान किया जाता है, तो उसी व्यवस्था से यह भी पूछा जाना चाहिए:

- * क्या उस क्षेत्र में नियमित कूड़ा उठाने की व्यवस्था है?
- * क्या पर्याप्त डस्टबिन और निर्धारित संग्रह स्थल उपलब्ध हैं?
- * क्या कूड़ा उठाने के बाद सड़क दोबारा साफ की जाती है?
- * क्या शिकायतों का समयबद्ध समाधान होता है?
- * क्या लापरवाही करने वाले अधिकारियों और ठेकेदारों पर भी कार्रवाई



होती है?

सिर्फ चालान काटने से शहर साफ नहीं होता। सफाई व्यवस्था को भी जवाबदेह बनाना होगा।

कूड़ा उठाने से लेकर निस्तारण तक—कहाँ टूट रही है व्यवस्था? ठोस कचरा प्रबंधन केवल सड़क से कूड़ा उठाने का काम नहीं है। इसमें घरों और दुकानों से संग्रह, कचरे की छंटाई, परिवहन, प्रसंस्करण, पुनर्चक्रण और अंतिम निस्तारण—सभी चरण शामिल हैं। दिल्ली के 2025–26 आर्थिक सर्वेक्षण में MCD क्षेत्र में प्रतिदिन लगभग 11,500 टन नगरपालिका ठोस कचरा उत्पन्न होने और स्रोत पर कचरा छंटाई का औसत लगभग 59 प्रतिशत दर्ज किया गया है। सर्वेक्षण में छंटाई के लिए आगे के लक्ष्य भी निर्धारित किए गए हैं।

यह आंकड़ा एक महत्वपूर्ण सवाल खड़ा करता है:

- * जब कचरे की मात्रा इतनी बड़ी है, तो क्या संग्रह, छंटाई और प्रसंस्करण की क्षमता उसके अनुरूप है?
- * यदि गीला और सूखा कचरा अलग-अलग एकत्र करने की व्यवस्था कागज पर है, लेकिन संग्रह के बाद वह फिर मिल जाता है, तो नागरिकों से अपेक्षित सहयोग का उद्देश्य ही कमजोर पड़ जाता है।

लैंडफिल के पहाड़: पुरानी समस्या, नई समय सीमाएं भलस्वा, गाजीपुर और ओखला लैंडफिल दिल्ली की लंबे समय से चली आ रही कचरा प्रबंधन चुनौती का प्रतीक हैं। पुराने कचरे के वैज्ञानिक प्रसंस्करण और बायो-माइनिंग का काम चल रहा है। MCMD का आधिकारिक eSBM पोर्टल इन गतिविधियों, वाहनों और बायो-माइनिंग रिपोर्ट की निगरानी के लिए व्यवस्था दिखाता है।

लेकिन सवाल यह है कि पुराना कचरा हटाने के साथ नया कचरा जमा होने की समस्या का स्थायी समाधान क्या है?

जुलाई 2026 में केंद्र की एक समीक्षा में तीनों लैंडफिल स्थलों पर बायो-माइनिंग और वैज्ञानिक प्रसंस्करण की प्रगति पर चर्चा हुई थी। वहीं, अगस्त 2026 की रिपोर्ट में बारिश के कारण बायो-माइनिंग की गति प्रभावित होने की बात सामने आई। इससे यह स्पष्ट होता है कि लैंडफिल की सफाई महत्वपूर्ण है, लेकिन रोजाना उत्पन्न होने वाले नए कचरे का वैज्ञानिक प्रबंधन भी उतना ही जरूरी है।

जनता के स्वास्थ्य का जिम्मेदार कौन? कूड़े के ढेर केवल शहर की सुंदरता को प्रभावित नहीं करते। लंबे समय तक जमा कचरे से दुर्गंध, कीट-पतंगों, आवारा पशुओं, नालियों में रुकावट और जलभराव जैसी समस्याएं बढ़ सकती हैं। खुले में कचरा जलाने से वायु प्रदूषण का जोखिम भी पैदा होता है।

दिल्ली सरकार के पर्यावरण विभाग के अनुसार, ठोस कचरा प्रबंधन की जिम्मेदारी शहरी विकास विभाग और स्थानीय निकायों से जुड़ी है। विभाग की नागरिक चार्टर सामग्री में कचरे की छंटाई, अव्यवस्थित प्रबंधन और नागरिक जागरूकता पर भी जोर दिया गया है।

तो फिर सवाल यह है: यदि किसी इलाके में कूड़ा कई दिनों तक पड़ा रहता है, तो वहां रहने वाले बच्चों, बुजुर्गों और आम नागरिकों के स्वास्थ्य की सुरक्षा के

लिए तत्काल जिम्मेदारी किसकी है?

क्या केवल नागरिकों को सावधानी बरतने की सलाह देना पर्याप्त है, या प्रशासन को भी यह सुनिश्चित करना होगा कि कूड़ा जमा ही न होने दिया जाए? सफाईकर्मों व्यवस्था की रीढ़ हैं—लेकिन निगरानी कौन करेगा? सफाई व्यवस्था की सफलता सफाईकर्मियों, वाहनों, उपकरणों, ठेकेदारों और अधिकारियों के संयुक्त काम पर निर्भर करती है। यदि किसी वार्ड में कर्मचारी कम हैं, वाहन उपलब्ध नहीं हैं, उपकरण खराब हैं या ठेकेदार की निगरानी कमजोर है, तो उसका असर सीधे जनता पर पड़ता है।

इसलिए सवाल सफाईकर्मियों को दोष देने का नहीं, बल्कि व्यवस्था की योजना, संसाधनों और निगरानी की गुणवत्ता का है।

MCD को यह बताना चाहिए कि:

- * प्रत्येक वार्ड में कितने कर्मचारी स्वीकृत हैं और कितने तैनात हैं?
- * कितने वाहन कार्यरत हैं और कितने खराब पड़े हैं?
- * सफाई का निरीक्षण कौन करता है?
- * क्या ठेकेदारों को भुगतान वास्तविक कार्य के सत्यापन के बाद किया जाता है?
- * लापरवाही पाए जाने पर क्या कार्रवाई होती है?

बजट का हिसाब भी जनता के सामने आए सफाई व्यवस्था पर करोड़ों रुपये खर्च होने के दावे किए जाते हैं। लेकिन नागरिकों का अधिकार है कि वे जानें:

1. कितना बजट स्वीकृत हुआ, कितना खर्च हुआ, किस पैसे की कितना भुगतान हुआ और उसके बदले जनता को क्या परिणाम मिला?
2. यदि किसी वार्ड में कूड़ा नियमित नहीं उठता, तो क्या उस क्षेत्र की सेवा-गुणवत्ता का स्वतंत्र निरीक्षण होता है? क्या ठेकेदारों के भुगतान में कटौती या दंड का प्रावधान लागू किया जाता है? क्या सफाई के वास्तविक परिणामों का सार्वजनिक ऑडिट होता है?

3. बजट खर्च होना और सफाई व्यवस्था सफल होना—दो अलग बातें हैं। जनता की शिकायतों का समाधान कब होगा? कई नागरिक कूड़े की तस्वीरें और वीडियो बनाकर शिकायत करते हैं। लेकिन यदि शिकायत के बाद भी उसी स्थान पर कूड़ा दोबारा जमा हो जाए, तो शिकायत प्रणाली की प्रभावशीलता पर सवाल उठाना स्वाभाविक है।

MCD से पूछा जाना चाहिए:

- * क्या हर शिकायत का एक निश्चित समय-सीमा में समाधान होता है?
- * क्या शिकायतकर्ता को कार्रवाई की जानकारी दी जाती है? और
- * यदि शिकायत बार-बार लंबित रहती है, तो जिम्मेदारी किस अधिकारी की तय होती है?

शिकायत प्रणाली तभी प्रभावी मानी जाएगी जब वह केवल शिकायत दर्ज करने का माध्यम न होकर समस्या के वास्तविक समाधान का साधन बने।

MCD और दिल्ली सरकार से जनता के 10 सीधे सवाल ?

- 1. दिल्ली की जनता के स्वास्थ्य और स्वच्छ वातावरण की जिम्मेदारी आखिर किस विभाग की है, और कूड़े से पैदा होने

वाले स्वास्थ्य जोखिमों के लिए जवाबदेह अधिकारी कौन है?

2. जब सड़कों, गलियों और बाजारों में कई-कई दिनों तक कूड़ा पड़ा रहता है, तो उसे समय पर उठाने की जिम्मेदारी किस अधिकारी और किस ठेकेदार की है?

3. MCD नागरिकों का चालान काटने में तेजी दिखाती है, लेकिन सफाई व्यवस्था में लापरवाही करने वाले अधिकारियों और ठेकेदारों पर कितनी कार्रवाई करती है?

4. दिल्ली के प्रत्येक वार्ड में प्रतिदिन कितना कूड़ा उत्पन्न होता है, कितना उठाया जाता है और कितना कूड़ा बिना उठे रह जाता है?

5. कूड़ा उठाने के लिए पर्याप्त सफाई कर्मचारी, वाहन और उपकरण उपलब्ध हैं या नहीं? यदि कमी है, तो उसे दूर करने की जिम्मेदारी किसकी है?

6. नागरिकों की सफाई संबंधी शिकायतों का समयबद्ध समाधान क्यों नहीं होता, और शिकायत लंबित रहने पर जवाबदेही किस अधिकारी की तय होती है?

7. दिल्ली में गीले और सूखे कचरे की छंटाई की व्यवस्था कितनी प्रभावी है, और संग्रह के बाद कचरा दोबारा मिल जाने से रोकने के लिए क्या निगरानी की जा रही है?

8. भलस्वा, गाजीपुर और ओखला जैसे लैंडफिल स्थलों पर पुराने कचरे के निस्तारण की समयसीमा बार-बार क्यों बदलती है, और इसके लिए कौन जवाबदेह है?

9. सरकार और MCD द्वारा स्वच्छता के लिए आवंटित बजट का कितना हिस्सा वास्तव में सफाई, कूड़ा उठाने और कचरा प्रसंस्करण पर खर्च हुआ है, और उसका परिणाम जनता के सामने कब रखा जाएगा?

10. दिल्ली के बच्चों और आने वाली पीढ़ियों को कूड़े, दुर्गंध और प्रदूषण से मुक्त वातावरण देने के लिए सरकार के पास क्या स्पष्ट, समयबद्ध और सार्वजनिक कार्यक्रम हैं?

अब सिर्फ आश्वासन नहीं, जवाब चाहिए दिल्ली के नागरिकों से स्वच्छता नियमों का पालन करने की अपेक्षा की जाती है। यह अपेक्षा उचित है। लेकिन नागरिकों को भी यह अधिकार है कि वे सरकार और नगर निगम से नियमित सफाई, पारदर्शी व्यवस्था, समयबद्ध शिकायत समाधान और स्पष्ट जवाबदेही की मांग करें।

दिल्ली के बच्चे जिस वातावरण में बड़े हो रहे हैं, वह केवल आज की समस्या नहीं है। यह आने वाली पीढ़ियों के स्वास्थ्य, जीवन-स्तर और शहर के भविष्य से जुड़ा प्रश्न है।

क्या दिल्ली की जनता को स्वच्छ और सुरक्षित वातावरण में रहने का अधिकार केवल चुनौती घोषणाओं तक सीमित रहेगा?

क्या MCD और दिल्ली सरकार यह बताएंगी कि कूड़ा उठाने, सफाई व्यवस्था, स्वास्थ्य सुरक्षा और वैज्ञानिक निस्तारण की जिम्मेदारी किस अधिकारी की है—और लापरवाही होने पर कार्रवाई किस पर होगी?

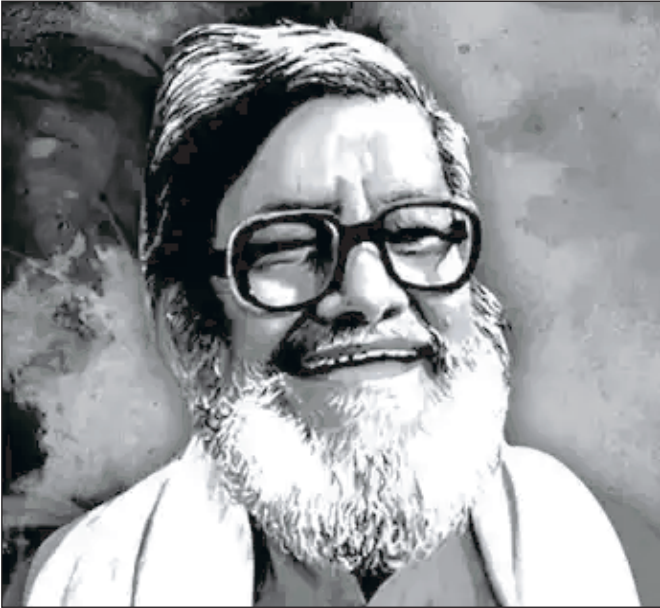
दिल्ली पूछ रही है—जवाबदेही तय होगी या जिम्मेदारी फिर एक विभाग से दूसरे विभाग तक जाती रहेगी?



प्रस्तुतकर्ता गोवर्धन दास बिनानी

हाथरस में जन्मे प्रभु लाल गर्ग ने हास्य को अपना विषय बना, अपने व्यंग्य को जिस शैली से प्रस्तुत किया, उसकी छाप आज तक कायम है। यही कारण है कि आज भी अनेकों ऐसे काव्यकार हैं, जो उनकी रचनाओं की शैली अर्थात आमजन को समझ में आने वाली बोलचाल की भाषा में – समाज में व्याप्त कुरीतियों, दिखावे और राजनीतिक भ्रष्टाचार पर हल्के-फुल्के व्यंग्य से तीखे प्रहार को अपनाकर, अपनी रचनाओं से न केवल लाखों पाठकों, श्रोताओं का मनोरंजन करने में सफल हो रहे हैं बल्कि स्वयं भी प्रसिद्धि पा रहे हैं।

जैसा आप सभी जानते हैं प्रभु लाल गर्ग अपने मूल नाम के बजाय उपनाम काका हाथरसी से विश्व विख्यात हुवे हैं। अब आपको बताना चाहता हूँ कि प्रभु लाल गर्ग



जी शुरु-शुरु में 'काका' नाम से नाटक किया करते थे। और इनको, इन नाटकों से ऐसी प्रसिद्धि मिली कि वे अपने नाम के आगे उपनाम काका तो जोड़ा ही साथ में अपने जन्म स्थान हाथरस भी जोड़ 'काका हाथरसी' लिखने लगे। इस तरह संक्षिप्त उपनाम का लाभ ऐसा मिला जिसके चलते इनकी एक अलग तरह की हास्य-व्यंग्य अनूठी शैली का असर इनके बाद के प्रायः प्रायः सभी हास्य-व्यंग्य काव्यकारों में देखने को मिला। इसके अलावा आज भी अनेकों, जो साहित्य से जुड़े नहीं हैं, वे प्रभु लाल गर्ग से भले ही न पहचान पायें लेकिन

'काका हाथरसी' सुनते ही कह उठेंगे – हास्य कवि 'काका हाथरसी' की बात कर रहे हैं।

अन्त में 'कला रत्न' (1966), 'पद्म श्री' (1985), 'आनंदी सिटीजन' (1989), जनता का प्यार और 'हास्य सम्राट' की उपाधि के अलावा अन्य अनेकों साहित्यिक सम्मान प्राप्त अत्यन्त लोकप्रिय और प्रसिद्ध हास्य-व्यंग्य कवि, लेखक, सम्पादक, अभिनेता रहे प्रभुलाल गर्ग उर्फ काका हाथरसी जी को जन्म जयन्ती पर श्रद्धा पूर्वक सादर कोटि-कोटि नमन करता हूँ।

जमीन धंसने से धनबाद मे एक दर्जन घरों मे दरार, मेयर पहुंचे मौके पर

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड

झारखंड

रांची, झारखंड के धनबाद में जमीन धंसने की एक और घटना सामने आई है। बस्ताकोला क्षेत्र अंतर्गत बंद झरिया आरएसपी कॉलेज के समीप स्थित कामिनी कल्याण बस्ती में शनिवार की दोपहर जोरदार आवाज के साथ जमीन धंस गई। इससे करीब एक दर्जन घरों में दरार पड़ गई। घटना से पूरी बस्ती में अफरा-तफरी और हड़शात का माहौल बन गया। इस घटना के बाद लोग अपने घरों से निकलकर जान बचाने के लिए सुरक्षित स्थानों की ओर भागने लगे।

भू-धंसान इतना भीषण था कि कई घरों की भूमिगत पाइपलाइन टूट गई, जिससे बस्ती में जलापूर्ति पूरी तरह ठप हो गई है। माईस रेस्क्यू की पूरी तकनीकी टीम ने भी घटनास्थल पर पहुंचकर जांच शुरू कर दी है। घटना से आक्रांशित लोगों ने झरिया-धनबाद मुख्य मार्ग पर आकर जोरदार विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया। इस दौरान लोगों ने सड़क के बीचोंबीच खड़े होकर आवागमन पूरी तरह ठप कर दिया। इससे मुख्य मार्ग पर वाहनों की लंबी कतारें लग

गईं। मेयर संजीव सिंह सबसे पहले पहुंचे। उन्होंने बीसीसीएल अधिकारियों को तत्काल मौके पर पहुंचकर युद्धस्तर पर राहत कार्य शुरू करने के लिए कहा। इसके बाद बस्ताकोला जीएमएसके गायकवाड़ और राजापुर परियोजना पदाधिकारी एम कुंडू पहुंचे। अधिकारियों ने प्रभावित स्थल का निरीक्षण कर पीड़ितों के साथ वार्ता की। मौके पर सिंदरी डीएसपी प्रकाश चंद महतो दलबल के साथ मौजूद थे। अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों ने आक्रांशित लोगों को समझा-बुझाकर और

उचित कार्रवाई का भरोसा देकर किसी तरह शांत कराया।

मेयर संजीव सिंह ने प्रभावित परिवारों से मुलाकात कर उन्हें हरसंभव मदद का आश्वासन दिया।। कहा कि सभी प्रभावितों को सुरक्षित जगहों पर बसाया जाएगा। तत्काल राहत के तौर पर मेयर ने बेघर हुए आशीष रवानी, निरंजन रवानी, बेबी देवी और विश्वजीत दे के परिवार को रात गुजारने के लिए बस्ताकोला रेस्क्यू स्कूल स्थित जीएम ऑफिस में रहने की व्यवस्था कराई।

झारखंड के स्टार्टअप इकोसिस्टम को सशक्त बनाने की दिशा में जिड़को की पहल

झारखंड इंटरनैटियल इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन उभरते उद्यमियों को दिखाया रास्ता रहेगा।

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, झारखंड में नवावार, उद्योगिता और स्टार्टअप इकोसिस्टम को सशक्त बनाने तथा राज्य के उभरते उद्यमियों को निवेशकों, गैटर्स और उद्योग विशेषज्ञों से जोड़ने के उद्देश्य से झारखंड इंटरनैटियल इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (जिडिको) ने बुधवार को 'रेली स्टार्टअप कर्नलियटव - रांची यकाटर' आयोजन किया गया। कार्यक्रम में राज्य के विभिन्न हिस्सों से 75 से अधिक स्टार्टअप

फाउंडर्स ने भाग लिया। कार्यक्रम में जिडिको के महाप्रबंधक श्री संजय कुमार साहू तथा स्टार्ट अप के वीएफ डब्ल्यूकेवत शुभम राज ने राज्य में स्टार्टअप एवं नवावार आधुनिक उद्योगिता को बढ़ावा देने के लिए संस्थागत सहयोग, उद्योग जगत से जुड़ाव और मजबूत स्टार्टअप नेटवर्क की भूमिका पर प्रकाश डाला। इस आयोजन ने राज्य के उद्यमियों को निवेश की तैयारी, व्यवसाय की विस्तार देने, प्रभावी पिच तैयार करने और निवेशकों के साथ दीर्घकालिक संबंध विकसित करने जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर

सीधे विशेषज्ञों से संवाद का अवसर प्रदान किया। टेली सलुशन प्रायवेट लिमिटेड, के एनिएम प्रोडक्ट एक्सप्लेन ग्लोबल चक्रवर्ती ने स्टार्टअप के लिए तकनीक एवं व्यावसायिक समर्थनों से जुड़े पहलुओं पर अपने विचार साझा किए। निवेश एवं फंडिंग से जुड़े सत्रों में एक स्टार कैपिटल की मैनेजिंग डायरेक्टर सुश्री वासंत अब्रावत, मीजी गार्ड कुमार धीरज तथा एलोन डब्ल्यूएर एवं मिस वू फाउंडेशन के श्री पंकज सोनी ने स्टार्टअप फाउंडर्स के साथ अपने अनुभव साझा किए। सविन कंसेट के बीपी बंध विजय बाबरा ने भी कार्यक्रम में सहभागिता की।

राजधानी में गरजे जूनियर शिक्षक, स्थायी नियुक्ति की मांग को लेकर लोअर पीएमजी में विशाल धरना

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओइशिया

भूबनेश्वर : राजधानी में जूनियर शिक्षकों ने जोरदार प्रदर्शन किया। स्थायी नियुक्ति की मांग को लेकर लोअर पीएमजी में विशाल धरना दिया गया। सरकार की अधिसूचना के बावजूद 13 हजार से अधिक जूनियर शिक्षक-शिक्षिकाओं की नियमित नियुक्ति नहीं हो पा रही है। हाईकोर्ट के स्थगन आदेश के बाद सरकार द्वारा हलफनामा दाखिल करने में देरी का आरोप लगाया गया है। राज्य के विभिन्न हिस्सों से आए एक हजार से अधिक जूनियर शिक्षक-शिक्षिकाएं विधानसभा के सामने एकत्रित हुए और विशाल धरना दिया। सरकारी उदासीनता और प्रशासनिक देरी के विरोध में हजारों शिक्षकों ने हाथों में प्लेकार्ड लेकर नारेबाजी की और सड़क पर अपना विरोध दर्ज कराया। आंदोलनरत शिक्षकों के आरोप के अनुसार, राज्य सरकार ने 13 हजार से अधिक जूनियर शिक्षकों को नियमित करने के संबंध में पहले अधिसूचना जारी की थी। लेकिन इस अधिसूचना के खिलाफ मामला दायर होने के बाद हाईकोर्ट ने इस पर स्थगन आदेश



जारी कर दिया था। इसके साथ ही, अपना पक्ष रखने के लिए सरकार को हलफनामा दाखिल करने का निर्देश दिया गया था। लेकिन शिक्षकों का आरोप है कि सरकार ने महीनों तक अदालत में आवश्यक हलफनामा दाखिल नहीं किया और मामले को टालने की नीति अपनाई। सरकारी देरी के कारण मामला हाईकोर्ट में लंबित है और शिक्षकों की स्थायी नियुक्ति की प्रक्रिया पूरी तरह रुक गई है।

शिक्षक संघ ने नाराजगी जताते हुए कहा कि प्राथमिक विद्यालयों में वर्षों से लगातार सेवा देने के बावजूद अब इन शिक्षकों का भविष्य अंधकार में चला गया है। शिक्षक प्रतिनिधियों ने चेतावनी दी कि जब तक सरकार हाईकोर्ट में उचित हलफनामा दाखिल कर कानूनी बाधाओं को दूर नहीं करती, तब तक आंदोलन जारी रहेगा।

सत्तारूढ़ दल के नेताओं के पत्र को लेकर अरुण का कटाक्ष, मनमोहन ने किया पलटवार

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओइशिया

भूबनेश्वर : राज्य में बुनियादी ढांचे के विकास कार्यों की धीमी गति को लेकर सत्तारूढ़ दल के नेताओं द्वारा लिखे गए पत्र पर BJD विधायक अरुण साहू ने प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कविता के माध्यम से सरकार पर कटाक्ष किया। उन्होंने कहा, "सरकार ने ढाई साल में सब कुछ उड़ा दिया, अब ढाई साल और रह गई तो जनता इन्हें डुबो देगी।" उन्होंने सवाल उठाया कि सत्तारूढ़ दल के नेताओं द्वारा पत्र लिखना उनकी ईमानदारी पक्ष और साफ नीयत है या फिर लर्ड-वोटिंग ड्रामा। अरुण ने कहा कि मुख्यमंत्री लोगों की शिकायतें सुन रहे हैं और दावा कर रहे हैं कि 95 प्रतिशत शिकायतों का समाधान किया जा रहा है। सांसद और विधायक जनता की आवाज सुनकर की शिकायतें क्यों नहीं सुन रहे हैं? पार्टी के नेताओं के पत्र लिखने के बाद यह सवाल सामने आई है कि सरकार में कई काम नहीं हो रहे हैं। सांसद और विधायक जनता की आवाज सुनकर सरकार को पत्र लिख रहे हैं। उन्होंने BJP में आंतरिक लोकतंत्र नहीं होने की भी आलोचना की। इस पर BJP के प्रदेश अध्यक्ष मनमोहन सागल ने जवाब दिया। उन्होंने कहा कि विपक्ष के पास आरोप लगाने की नैतिकता नहीं है। "80 वर्षों तक उन्होंने ऐसा नहीं किया, तो आज वे क्यों सवाल उठा रहे हैं? मनमोहन सागल ने कहा कि सरकार सभी कार्यों को तेजी से आगे बढ़ा रही है। संकल्प पत्र में जो बातें लिखी गई हैं, उन सभी कार्यों को पांच वर्षों में पूरा किया जाएगा। बुनियादी समस्याओं का पूरी तरह समाधान करना सरकार की प्राथमिकता है और सरकार इसके लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि वल रहे कार्यों को गति देने के लिए सै पत्र लिखा गया है। इसे नकारात्मक दृष्टिकोण से नहीं लिया जाना चाहिए। पत्र लिखने से कार्यों में तेजी आएगी।

